Ok"ki % 39(vad % 11 (uoEcj % 2017(eY; % nl #lk,

सीटू मजदूर

सार्वजनिक उपक्रमों के निजीकरण का विरोध

(रिर्पोट पृ० 15)

तिरूवनंतपुरम, केरल, में 13 सितम्बर को हुआ राजभवन मार्च

पालघाट, केरल, में 7 अक्टूबर को हुई कैंडल लाइट रैली

सार्वजनिक उपक्रमों के निजीकरण का विरोध

वैश्विक टेंडर निकालने की मोदी सरकार की कोशिश के खिलाफ, सलेम स्टील प्लांट की रणनीतिक बिक्री के विरूद्ध चल रहा संधर्ष तेज हो गया और सलेम स्टील बचाओ संयुक्त समिति के नेतृत्व में 300 मजदूरों ने 23 अक्टूबर को सलेम के मुख्य डाकघर कार्यालय के बाहर रास्ता रोको आंदोलन करते हुए गिरफ्तारियां दीं।

राज्यों के संयुक्त ट्रेड यूनियन कन्वेंशन

(रिपोर्ट पृ० 10)

छत्तीसगढ

ओडिशा

सीटू मजदूर

lhvkbVh;q dk e[ki=

नवम्बर 2017

सम्पादक मण्डल

सम्पादक

के हेमलता

कार्यकारी सम्पादक

जे एस मजुमदार

सदस्य

तपन सेन,

एम एल मलकोटिया,

कश्मीर सिंह ठाकुर,

पुष्पेन्द्र त्यागी,

एच.एस.राजपूत

अंदर के पृष्ठों पर

मजदूर वर्ग और महान अक्टूबर क्रांति के. हेमलता 5

कुछ महत्वपूर्ण बिन्दू 8

राज्यों में ट्रेड यूनियनों के संयुक्त कन्वेंशन 10

उद्योग व क्षेत्र 13

केरल में सार्वजनिक उद्यमों के निजीकरण के खिलाफ आन्दोलन 15

परियोजनाओं के खिलाफ साजिश 18

राज्यो से 21

मजदूर– किसान एकता 23

अंतर्राष्ट्रीय 24

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक 26

सम्पादकीय

जनवाद की हिफाजत करो

etnjk vkj turk d tuoknh vf/kdkj xHkhj geyk dk f'kdkj gA tuoknh vf/kdkjk dh j{kk] tkuu & ckyu & fojk/k dju vkj çn'ku dju d vf/kdkj VM ;fu;u vknkyu d fodkl dh io&'krl gA vkj Bhd bUgh vf/kdkjk dk vkt pukrh nh tk jgh gA

u'kuy xhu fVC;uy ¼,u th Vh½ u fnYyh d tUrj eUrj ij fdlh Hkh rjg d fojk/k dk;Øe fd; tku ij ijh rjg çfrcU/k yxk fn;k gA bld igy tc1993 e ckV Dyc ij fojk/k dk;Øek ij çfrcU/k yxk;k x;k Fkk rk ml Fkkih x;h cfn'k d f[kykQ fnYyh e VM ;fu;uk u ,frgkfld t>k: yMkb yMh Fkh] n'k Hkj l gtkjk etnj fnYyh igp Fk] cjhdM l rkM Fk] ykfB;k [kkb Fkh] vkl xl Hkxrh Fkh] rc tkdj lln d lkeu fojk/k dju dh odfYid txg tUrj eUrj fu/kkfjr dh x;h FkhA

vud jkT;k e ogk d mPp U;k;ky;k u jkT;k dh jkt/kkfu;k ;gk rd fd db 'kgjk e Hkh fojk/k çn'kuk ij dMh cfn'k vkj jkd yxkb g;h gA

jktuhfrd lj{k.k e dkikjV l }kjk fd; tk jg mPp Lrjh; Hk"Vkpkj dk <kdu&Niku d fy; ^^tkuu d vf/kdkj** ij cM gey fd; tk jg gA vfer 'kkg d cV t; 'kkg u bUVjuV ehfM;k ^^n ok;j** ij ekugkfu dk ednek Bkd fn;k gA **n ok;j^^ dk dlj ;g Fkk fd mlu ^^vfer'kkg dk ikjlef.k Li'k** 'kh"kd l ,d [kcj Nkih Fkh] ftle mlu crk;k Fkk fd fdl rjg ujæ eknh d ç/kkueU=h cuu d ckn vfer 'kkg d cV dh dEiuh dk /k/kk vkj vkenuh ,d gh lky e 16 gtkj xuk c< x;h A xtjkr dh ,d LFkkuh; vnkyr u ^^n ok;j** ij jkd yxk nh g fd og vkx l t; 'kkg d ^^0;kikj** d ckj e dkb [kyklk u dj A fnYyh e g;q i=dkjk d lEeyu e ikfjr ,d çLrko e çl dk xyk ?kkVu oky bl dne ij loky mBk;k x;k g A

jktLFkku dh ol/kjk jkt ljdkj bu lcl Hkh vkj vkx c< x;h vkj 7 flrEcj dk ,d v/;knsk tkjh dj fcuk ljdkj dh btktr d ^^ykd lodk**] vf/kdkfj;k] ttk d Hk"Vkpkj d ekeyk e ,Qvkb vkj nt dju ij jkd yxk nh g A ehfM;k dk Hkh bud ckj e Nkiu l çfrcf/kr dj fn;k g A Nkiu dk nLlkgl dju ij ty tku dh /kedh Hkh bl v/;knsk e fufgr g A ,fMVl fxYM v,Q bf.M;k }kjk bldk fojk/k fd; tku] bl ^^lfo/kku çnÙk çl dh vktknh ij geyk ^^ crk; tku vkj ^^bl v/;knsk dk dkuu cuku dh ctk; rjr çHkko l okil fy; tku** dh ekx d ckotn Hkktik ljdkj ckt ugh vk;h vkj mlu bl dkuu cuku d fy; fo/kkul Hkk e i'k dj gh fn;k A

cxy# e i=dkj xkjh yd'k vkj f=ijk e 'kkUru Hkkfed dh gR;k;] ftud f[kykQ lhV u n'k Hkj e fojk/k dk;okfg;k dh Fkh] vfHk0;fä dh Lor=rk ij t?kU; gey g] tk bejtlh d dky fnuk dh ;kn fnykr gA etnj ox dk bu u;h pukfr;k dk MVdj lkeuk djuk gkxk A etnjk vkj turk d ykdrkf=d vf/kdkjk dh fgQktr e lep VM ;fu;u vknkyu dk ,dtV dju dh fn'kk e lhV dk igy vkj vxvkb djuh gkxhA

शोक संवेदना

कॉमरेड डी. एल. सचदेवा

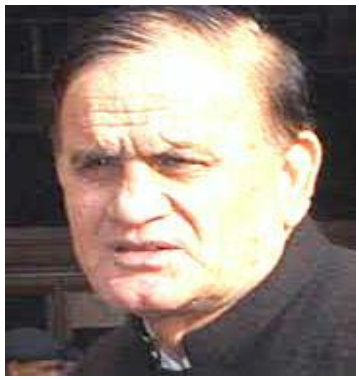

महासचिव तपन सेन व सीटू के केन्दीय सचिवमंडल के अन्य सदस्य एटक कार्यालय में दिवगंत नेता को पुष्पचक्र अर्पित करते हुए

एटक के राष्ट्रीय सचिव व देश के संयुक्त ट्रेड यूनियन आंदोलन के अनुभवी नेता कामरेड डी एल सचदेवा का बीमारी के चलते 26 अगस्त, 2017 को नई दिल्ली के एक अस्पताल में निधन हो गया। वे 73 वर्ष के थे। केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों के संयुक्त मंच की ओर से मांगो, धोषणाओं व दस्तावेजों को तैयार करने की विशेषज्ञता व समर्पण के कारण कॉमरेड सचदेवा का आदर किया जाता था। वे, दिल्ली व उसके इर्द–गिर्द के कई सारे उद्योगों की जमीनी ट्रेड यूनियन गतिविधियों में भी सक्रिय थे।

सीटू महासचिव तपन सेन व केन्द्रीय सचिवमंडल के अन्य सदस्यों ने एकट के केन्द्रीय कार्यलय में जाकर दिवंगत नेता के पार्थिव शरीर पर पुष्प चक्र अर्पित किया तथा कॉमरेड सचदेवा के परिवार के सदस्यों व एटक के नेताओं व सदस्यों के प्रति संवेदना व्यक्त की। इंटक, बी एम एस, एक्टू व ए आइ यू टी यू सी समेत अन्य केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों के नेताओं ने भी व्यक्तिगत रूप से एटक कार्यालय पहुँचकर दिवंगत नेता को अपनी आदरपूर्ण श्रृद्धांजलि देते हुए संवेदना व्यक्त की।
एटक ने कॉमरेड सचदेवा की स्मृति में 12 सितम्बर को अपने केन्द्रीय कार्यलय में एक शोक सभा का आयोजन किया। सीटू की अध्यक्ष हेमलता व अन्य केन्द्रीय सचिव मंडल सदस्य इसमें उपस्थित थे तथा महासचिव तपन सेन ने शोकसभा को संबोधित करते हुए दिवंगत नेता को श्रृद्धांजलि दी। अन्य केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों के नेतागण, आइ एल ओ के निदेशक, स्थानीय ट्रेड यूनियनों के नेता व कॉमरेड सचदेवा के परिवार के सदस्य शोकसभा में उपस्थित थे।

सरकार ने किसानों पर थोपा और बोझ

सीटू महासचिव व सांसद तपन सेन ने मोटर वाहन नियमों में संशोधन कर ''कृषि ट्रैक्टर एक गैर परिवहन वाहन है'' शब्दों को हटाने की प्रस्तावित राजपत्र अधिसूचना के खिलाफ 18 अक्टूबर को केन्द्रीय सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी को एक अत्यावश्यक पत्र लिखा। इस कदम से कृषि ट्रैक्टर 'व्यवसायिक परिवहन वाहन' की श्रेणी में आ जायेगा और उस पर वे सभी शुल्क व कर लागू हो जायेंगे जिनसे अभी तक उसे छूट प्राप्त थी। कृषि ट्रैक्टर जुलाई–बोवाई में काम आने वाली मशीन है और उन्हें किसी भी तरह से व्यावसयिक परिवहन वाहनों की श्रेणी में नहीं डाला जा सकता है।
ऐसा करना, अब तक रही सरकारों की कृषि क्षेत्र पर कर न लगाने की लम्बे समय से कायम नीति के विरूद्ध होगा। अगर ऐसा संशोधन किया जाता है तो इससे कृषि कार्य में प्रयोग किये जा रहे हर एक ट्रैक्टर पर किसान को कम से कम 30,000 रूपये वार्षिक का बोझ पड़ेगा। चूंकि प्रस्तावित संशोधन पहले से ही बीमार कृषि क्षेत्र पर भारी बोझ डालेगा इसलिए तपन सेन ने इसे वापस लिए जाने की माँग की।

मजदूर वर्ग और महान अक्टूबर क्रांति

के. हेमलता

सारी दुनिया में मजदूर वर्ग पिछले एक वर्ष से महान अक्टूबर क्रांति की शताब्दी मना रहा है। सीटू के 15 वें सम्मेलन ने कैडरों के विचारधारात्मक विकास को केन्द्र में रखते हुए महान अक्टूबर क्रांति की शताब्दी मनाने का फैसला लिया था। इस फैसले के अनुरूप सारे देश में राज्य समितियों व सीटू की संबद्ध यूनियनों के द्वारा बहुत सी कक्षायें, कन्वेंशन, बैठकों, संमिनारों आदि का आयोजन किया गया है। इसके अतिरिक्त मजदूर वर्ग के अलग–अलग क्षेत्रों के बहुत से संगठनों– बीमा, बैंक, टेलीकॉम, राज्य व केन्द्र सरकार के विभागों आदि– ने भी क्रांति की शताब्दी को मनाते हुए कार्यक्रमों का आयोजन किया है। वामपंथी दलों ने भी देश भर में अक्टूबर क्रांति की शताब्दी को मनाया है।

विश्व के सभी महाद्वीपों में, 126 देशों के 9 करोड़ 20 लाख मजदूरों का प्रतिनिधित्व करने वाले वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियंस (डब्ल्यू एफ टी यू) ने भी दुनिया भर में विभिन्न काय्रक्रमों के माध्यम से अक्टूबर क्रांति की शताब्दी मनायी है। डब्ल्यू एफ टी यू का नेतृत्व, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ रशियन फेडरेशन द्वारा मास्को में आयोजित किए जा रहे समापन कार्यक्रम में भाग लेगा।

महान अक्टूबर क्रांति एक ऐसी घटना थी जो 100 वर्ष पहले रूस में घटित हुई थी। इसके चलते रूस जैसे औद्योगिक रूप से पिछडे देश में समाजवाद की स्थापना हुई थी। रूस व पूर्वी यूरोप में समाजवाद को लगे धक्कों व उसके पलट जाने के बावजूद, इसका क्या महत्व है कि समूची दुनिया का मजदूरवर्ग बराबर इससे प्ररेणा ग्रहण कर रहा है?

जैसा कि अमेरिकी समाजवादी व पत्रकार जॉन रीड ने अपने आँखो देखे हाल में लिखा है, अक्टूबर क्रांति वास्तव में एक ऐसी घटना थी जिसने 'दुनिया को हिला दिया था'। इसने साम्राज्यवाद के लिए मौत की घंटी बजा दी थी। मजदूरों, किसानों व मेहनतकशों के अन्य तबकों ने पूंजीवाद के पुराने शोषक ढांचे को तहस–नहस कर एक नये शोषणमुक्त, समाजवादी समाज का ढांचा खड़ा किया था। इसने मानवता के भविष्य के विकास का रास्ता दिखाया। यह मजदूर वर्ग की पार्टी, बोल्शेविक पार्टी द्वारा 'ठोस परिस्थितियों के ठोस विश्लेषण' और समाज को बदलने के लिए मार्क्सवादी सिद्धांतों का शानदार उदाहरण था।

क्रांति ने जो कुछ हासिल किया वह उस समय पर अभूतपूर्व व अकल्पनीय था। यह एक अजूबा था। यहाँ तक कि यूरोप के तथाकथित 'कल्याणकारी राज्य' भी द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, क्रांति के बाद मजदूरों द्धारा हासिल अधिकारों की बराबरी नही कर पाये जिन्होने भूमि वितरण, कारखानों पर मजदूरों का नियन्त्रण, निर्वाचित प्रतिनिधियों को वापस बुलाने का अधिकार, सभी के लिए मुफ्त शिक्षा व लॉड्रीज हासिल की थीं। चेक कम्युनिस्टों की यह टिप्पणी की ' हमारे सारे कल, आज हो गये हैं' क्रांतिकायिों द्वारा हासिल किए गये नाटकीय परिवर्तनों का सटीक वर्णन करती हैं।

दुनिया भर के राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों पर अक्टूबर क्रांति का प्रभाव, दूसरे विश्व युद्ध में नाजी जर्मनी को परास्त करने में सोवियत संघ की भूमिका, हिटलर के फासीवाद के शिकंजे से दुंनिया को बचाने में सोवियत जनता द्वारा दी गयीं कुर्बानियाँ सभी जानते हैं। समाजवादी रूस ने हमारी आजादी के बाद, विभिन्न सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों की, संस्थानों की स्थापना और एक आत्म निर्भर अर्थव्यवस्था को विकसित करने के माध्यम से हमारे देश के तकनीकी व औद्योगिक आधार को विकसित करने में बिना शर्त मदद की।

विश्व को बदल देने वाली एक सफल क्रांति करने वाले रूस के मजदूर वर्ग के अनुभवों से भारत का मजदूर वर्ग क्या सबक सीख सकता है ?

रूस में क्रांति से पहले मजदूर वर्ग और ट्रेड यूनियनों की दशा, आज के भारत के मजदूर वर्ग की दशा से बेहतर नहीं थी। उनकी स्थिति कहीं बदतर थी। हालांकि, रूस में श्रमिक आन्दोलन की शुरूआत पूंजीवाद के विकास के साथ हुई और पहली हड़ताल 1870 से 1880 के बीच हुई, परन्तु यूनियनें 1905 तक ही गठित हो पायीं। जल्दी ही ट्रेड यूनियनों ने अपना प्रभाव बढ़ा लिया। लेकिन, 1907 से यूनियनों पर दमन व पुलिस का दखल बढ़ गया। यूनियन की कमेटी के सदस्यों को बराबर पुलिस द्वारा गिरफतारी के खतरे का सामना करना पड़ता था। पुलिस ने उनके कोषों व रजिस्टरों को जब्त कर लिया था। अध्यक्षों व सचिवों समेत यूनियनों के नेताओं को साईबेरिया निर्वासित किया जाता था। जारशाही ने यूनियनों को अपनी रोजमर्रा गतिविधियों को संचालित करना और यहाँ तक कि मजदूरों की आर्थिक माँगों को लेकर संधर्ष को संगठित करने तक को असंभव बना दिया था। 1914 में युद्ध की धोषणा ने तो स्थिति को बदतर बना दिया। युद्ध का प्रयोग ट्रेड यूनियनों को और ज्यादा दबाने के लिए किया गया। दमन की इंतहा को इस तथ्य से समझा जा सकता

है कि 1905 में 200,000 मजदूरों को ट्रेड यूनियनों में संगठित किया गया था, जबकि 1917 में क्रांति की पूर्वसंध्या पर केवल तीन यूनियनें थीं जिनकी कुल सदस्यता 1500 थी।

लेकिन ट्रेड यूनियनों की ऐसी स्थिति के बावजूद मजदूर वर्ग व मेहनतकश जनता के अन्य तबकों ने जबर्दस्त दृढ़ता के साथ अपनी आर्थिक मांगो के संघर्षो को आगे बढ़ाया। मजदूर वर्ग ने जारशाही के भारी दमन के अंतर्गत ऐसे संघर्षो के माध्यम से मजदूर वर्ग की चेतना हासिल की।

युद्ध ने देश को तबाह कर दिया। मजदूरों की दशा बदतर हो गयी। भोजन दुलर्भ हो गया। सिपाहियों को जमा देने वाली ठंड में बिना समुचित कपड़ों व उपकरणों के लड़ने को मजबूर किया गया। इन सभी तबकों में असंतोष बढ़ रहा था।

ऐसे हालातों में ही, पेट्रोग्राद की महिला मजदूरों ने 23 फरवरी, 1917 (नये कैलेन्डर के अनुसार 8 मार्च) को कामकाजी दिन में हड़ताल कर पहली बार अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। टेक्सटाइल फैक्टरी की महिला मजदूर कारखाने से बाहर आ गयीं और सड़कों पर मार्च करते हुए उन्होंने रास्ते में आने वाली फैक्टरियों के मजदूरों से साथ आने का आहवान किया। रोटी दो और युद्ध समाप्त करो की मांग करते हुए हजारों महिला व पुरूष मजदूर इस जुलूस में शामिल हुए। उन्होने राजशाही के खात्मे की माँग की। फौज ने उनके सैकड़ों नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। उस दिन 100 से ज्यादा लोग मारे गये थे। जनता पर ऐसे आंतक के बरपा किये जाने से नाराज फौज का एक बड़ा हिस्सा क्रांतिकारियों से आ मिला। इस फरवरी क्रांति ने जार निकोलस द्वितीय को सत्ता छोड़ने को मजबूर कर दिया।

जारशाही के तख्तापलट ने मजदूरों व मेहनतकशों की रचनात्मक व संगठित पहलकदमियों के लिए रास्ता खोल दिया। मजदूरों को मजदूरों की सोवियतों में संगठितं किया गया। ये मजदूरों की परिषदें थीं। वास्तव में, पहली सोवियत का गठन एक हड़ताल कमेटी के रूप में, 1905 की टेक्सटाईल मजदूरों की हड़ताल के दौरान इवानोव्ना– वोज्नेसेस्क में किया गया था। बाद में यह नगर के मजदूरों की एक निर्वाचित निकाय के रूप में विकसित हुई। इसके बाद लगभग 50 नगरों में मजदूरों के डिप्टियों की सोवियतों का गठन हुआ लेकिन इन्हें जल्द ही कुचल दिया गया। नेताओं को गिरफ्तार कर कैद में डाल दिया गया। फरवरी क्रांति के बाद मजदूरों की सोवियतें व फौजियों की सोवियतें, जो किसान परिवारों से थे और किसानों का प्रतिनिधत्व करते थे, बनीं। 1917 में हुई सोवियतों की काँग्रेस में 400 अलग–अलग सोवियतों का प्रतिनिधित्व करने वाले 1090 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। अक्टूबर क्रांति के समय तक वहाँ 900 सोवियतें थीं। इनमें से बहुमत पेट्रोग्राद व मास्को की सोवियतों का था जिनपर बोल्शेविकों का नियन्त्रण था। मजदूरों की सोवियतें रूस के मजदूर वर्ग के राजनीतिक संघर्ष का औजार थीं।

शुरू से ही सोवियतों में बोल्शेविकों को बहुमत प्राप्त नहीं था। वे जुलाई 1917 तक अल्पमत में थे। लेकिन, लेनिन के नेतृत्व में उनके द्वारा अपनायी गई कार्यनीति ने अक्टूबर आते – आते सोवियतों में बहुमत प्राप्त करने में मदद की।

लेनिन ने, धैर्य व योजनाबद्ध तथा लगातार ढंग से सरकार का पर्दाफाश करते हुए प्रांतीय सरकार के बारे में भ्रम को साफ करने के माध्यम से सोवियतों में बहुमत हासिल करने की जरूरत पर बल दिया। उन्होने, उन्हें, समूची राज्य सत्ता को सोवियतों के पास स्थानांतरित करने की जरूरत के बारे में समझाने पर जोर दिया। बोल्शेविकों के सामने प्रस्तुत किया गया यह एक महत्वपूर्ण कार्य था। उन्होंने संगठन पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा, ऐसी जीत हासिल करने के लिए (पूंजीपतियों पर जीत), मजदूरों व गरीब किसानों के सत्ता हासिल करने, उसे बनाये रखने व उसका समुचित प्रयोग करने के लिए आपको जिस चीज की आवश्यकता होती है वह है संगठन, संगठन और संगठन। शब्दों में अपना विश्वास मत रखो। वादों के द्वारा गलतफहमी का शिकार मत बनो। अपनी ताकत को बढ़ा–चढ़ा कर नहीं आंको। हर कारखाने, हर रेजीमेंट, हर कंपनी व प्रत्येक रिहायशी ब्लॉक में संगठन बनाओ। अपने संगठन पर हर दिन, हर घंटे काम करो; इस काम को स्वयं करो, क्योकि यह ऐसा काम है जिसे आप किसी और को नहीं सौंप सकते हैं। मजदूरों के बीच धैर्य के साथ लगातार और पायेदारी के साथ काम करते हुए, आगे बढ़े हुए मजदूरों में पूरा विश्वास पैदा करना ही सफलता की गारन्टी करता है।

लेनिन ने, मजदूर वर्ग को किसानों के साथ एकता कायम करने के महत्व के बारे में सिखाया। ऑल रशियन ट्रेड यूनियन कांफ्रेस को संबोधित करते हुए उन्होंने मजदूरों से खेतमजदूरों को संगठित करने की पहल करने और बहुमत जनता को अपने पक्ष में करने का आहवान किया। किसी भी ट्रेड यूनियन आंदोलन का पहला सूत्र वाक्य है कि वह राज्य पर भरोसा न कर अपने वर्ग की ताकत पर भरोसा करे। क्रांतिकारी उत्पीड़ित वर्ग के हाथों में सत्ता का हस्तांतरण ही मौजूदा संकट से पार पाने का एकमात्र रास्ता है तथा आर्थिक डगमगाहट व युद्ध का एकमात्र ईलाज है, उन्होंने कहा।

आज जब पूंजीपति वर्ग, पूंजीवाद के व्यवस्थागत संकट के साये में अपने मुनाफों को बनाये रखने की कोशिशों में मजदूर वर्ग पर हमला कर रहा है, लेनिन के ये शब्द उतने ही प्रासंगिक हैं जितने वे सौ वर्ष पूर्व थे।

आज हमारे देश में मजदूर वर्ग का बड़ा हिस्सा शासक वर्गो की विचार धारा के प्रभाव में है। शासक वर्ग नवउदारवादी नीतियों के माध्यम से मेहनतकश जनता के सभी तबकों–मजदूरों, खेतमजदूरों, किसानों, दस्तकारों आदि के जीवन, जीविका, काम की स्थितियों व बुनियादी अधिकारों पर हमला कर रहे हैं। ये नीतियां सार्वजनिक धन संपदा को कुछ बडे निजी कारपोरेटों के हाथों में हस्तांतरित करने के लिए हैं। इसी के साथ ही ये झूठे नारों व वादों के माध्यम से जनता में भ्रम पैदा करने में भी सक्षम हैं, हालांकि, धीरे – ध ीरे लोगों का मोहभंग हो रहा है। वे साम्प्रदायिक उन्माद, जातिवादी भावनायें व क्षेत्रीय भावनाओं को भड़का कर मेहनतकश जनता के संयुक्त संधर्षो को कमजोर व नाकाम करने की कोशिशें कर रहे हैं।

मेहनतकश वर्ग को शासक वर्गो के प्रभाव से बाहर लाने के लिए धैयपूर्ण, योजनाबद्ध व निरन्तर समझाईश व सिखाने की आवश्यकता है जैसा कि लेनिन ने हमें सिखाया है। दस दिन जब दुनिया हिल उठी में कहा गया है कि क्रांति के दौरान, सारा रूस पढ़ना सीख रहा था और राजनीति, अर्थशास्त्र, इतिहास पढ़ रहा था क्योंकि लोग जानना चाहते थे.....। हजारों संगठनों ने सैकड़ों हजार परचे बांटे थे, फौजों, गांवों, कारखानों व गलियों में उन्हें पहुँचाया गया था। लोगों ने उन्हें ऐसे आत्मसत किया था जैसे गरम रेत पानी को करती है। इनमें भ्रष्ट करने वाली कहानियां, झूठा इतिहास, तोड़ा–मरोड़ा गया धर्म व सस्ती कल्पना के स्थान पर सामाजिक व आर्थिक सिद्धान्त थे, इर्शन था टालॅस्टाय, गोर्की व गोगोल..... की रचनायें थीं।

आज हमें मजदूर वर्ग व जनता में जानने की, शासक वर्ग की नीतियों व उनकी रोजमर्रा जिंदगी से उनके संबंध को समझने की, उनके नारों के पीछे के सच को जानने की ऐसी ललक पैदा करने की आवश्यकता हैं। इसके साथ–साथ, वे अपने अनुभवों के आधार पर नीतियों के पीछे की राजनीति को समझें, इसके लिए हमें नीतियों के पीछे की राजनीति का उनके आसानी से समझ आने वाली भाषा में पर्दाफाश करने का गंभीर प्रयास करना होगा। हमें, अमानवीय पूंजीवादी शोषण को समाप्त कर एक शोषणविहीन समाजवादी व्यवस्था कायम करने में मजदूर वर्ग की ऐतिहासिक भूमिका को पूरा करने के लिए मजदूर वर्ग की वर्गीय चेतना को विकसित करना होगा। हमें, उसे इस भूमिका का निर्वाह करने के लिए तैयार करना होगा।

महान अक्टूबर क्रांति हमें सिखती है कि शोषणकारी पूंजीवादी व्यवस्था को समाप्त करने का केवल यही रास्ता है।

राज्यों से

पंजाब

निर्माण मजदूरों के पंजीकरण व उसके नवीनीकरण को ऑनलाइन करने के पंजाब सरकार के फैसले के खिलाफ सीटू की यूनियनों ने जिला मुख्यालयों पर रैलियां निकालीं व प्रदर्शन किये। रैलियों व प्रदर्शनों को लुधियाना, रोपड़, पठानकोट, होशियारपुर व अन्य जिलों में अच्छा समर्थन मिला। उपायुक्तों । के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन भी दिये गये।

रैलियों को सीटू नेताओं ने संबोधित किया। रैलियों में श्रम विभाग द्वारा ऑफ लाइन पंजीकरण को बहाल करने; बिना शर्त मनरेगा मजदूरों को निमार्ण मजदूर कल्याण अधिनियम में शामिल करने; निमार्ण व मनरेगा मजदूरों के न्यूनतम वेतन को 600 रूपये प्रतिदिन तक बढ़ाने तथा सभी राज्य कल्याण बोर्डों का गठन तुरन्त करने की मांगे शामिल थीं। इन रैलियों में मजदूरों से 9–11 नवम्बर के दिल्ली महापड़ाव में भारी संख्या में शामिल होकर उसे ऐतिहासिक बनाने का आहवान मजदूरों से किया गया।

कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु

न्यूनतम वेतन अधिनियम के अंतर्गत केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड की बैठक

डॉ० कश्मीर सिंह ठाकुर

न्यूनतम वेतन अधिनियम के अंतर्गत केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड की एक बैठक 3 अगस्त, 2017 को श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में हुई। यह बैठक 7 वर्षो के अन्तराल के बाद हुई। इसकी कार्यसूची में विचार हेतु निम्नलिखित विषय थे :

1. (i) न्यूनतम वेतन का निर्धारण/पुनर्निधारण
   (ii) न्यूनतम वेतन अधिनियम 1948 का कार्यान्वयन
      (अ) केन्द्रीय दायरे में कार्यान्वयन
      (ब) राज्यों के दायरे में कार्यान्वयन
   (iii) परिवर्तनीय मंहगाई भत्ते (डी ए) को पारित करना, राज्यों व केन्द्र शाषित प्रदेशों में परिवर्तनीय मंहगाई भत्ते को स्वीकार करने के बारे में जानकारी
   (iv) सुप्रीम कोर्ट के 1991 के फैसले के आलोक में वेतन की न्यूनतम दरों को राष्ट्रीय फ्लोर स्तरीय न्यूनतम वेतन से कम निर्धारित न करना

2. (i) आई आई टी / एन आई टी, जवाहर नवोदय विद्यालयों तथा सभी सरकारी संस्थानों व अस्पतालों में कार्यरत मेस/कैन्टीन कर्मियों के लिए रोजगार की अलग अनुसूची तैयार करना
   (ii) अधिसूचना क्रम संख्या 188 (ई) में रेलवे को शामिल करना
   (iii) घर आधारित कामगारों को अनुसूचित रोजगार में शामिल करना

3. (i) सभी राज्य सरकारों को, न्यूनतम वेतन को उपभोक्ता मूल्य सूचकांक से जोड़ने की सलाह देना।

कार्यसूची के विषय संख्या 2 व 3 को सीटू की पहल पर उसमें जोड़ा गया। एजेंडा सं० 1 पर चर्चा की पहल करते हुए सभी केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों प्रतिनिधियों ने न्यूनतम वेतन के निर्धारण के लिए 15 वें भारतीय श्रम सम्मेलन की सिफारिशों व सुप्रीम कोर्ट के 1991 के फैसले पर अमल करने पर जोर दिया। इस संबंध में सीटू प्रतिनिधि ने कहा कि सरकार पहले ही 7वें वेतन आयोग की सिफारिशों को स्वीकार कर चुकी है। 7वें वेतन आयोग ने सिफारिश की है कि 15 वें भारतीय श्रम सम्मेलन व सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के आधार पर अकुशल श्रमिक के लिए न्यूनतम वेतन 18000 रूपये प्रतिमाह तय किया जाये। केन्द्र सरकार को दोहरा मापदंड नही अपनाना चाहिऐ और न्यूनतम वतन 18000 रूपये प्रति माह से कम नही होना चाहिए।

न्यूनतम वेतन के कार्यन्वयन के बारे में यह इंगित किया गया कि केन्द्र सरकार द्वारा पॉर्टल व्यवस्था को अपनाये जाने के बाद श्रम कानूनों का उल्लंघन कई गुना बढा है। सभी केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों के प्रतिनिधियों ने पार्टल व्यवस्था को समाप्त किये जाने और श्रम कानूनों के उल्लंघन की शिकायात पर निरीक्षण के लिए केन्द्रीय श्रम अधिकारियों को छूट दिये जाने की वकालत की। यह अजीब व हैरान करने वाली बात थी कि राज्य सरकारों के सभी आमंत्रित किये गये प्रतिनिधि हरियाणा, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, अरूणाचल प्रदेश जैसे भाजपा शामिल राज्यों से ही थे। उन सभी ने न्यूनतम वेतन में बढ़ोतरी व 7वें केन्द्रीय वेतन आयोग की 18000 रूपये प्रतिमाह न्यूनतम वेतन की सिफारिश का विरोध किया। बी एम एस के प्रतिनिधि ने 18000 रूपये प्रतिमाह न्यूनतम वेतन पर जोर दिया लेकिन भाजपा शाषित राज्य सरकारों के प्रतिनिधियों ने नयूनतम वेतन में वृद्धि का विरोध किया। नियोक्ताओं के प्रतिनिधियों के बहुमत ने न्यूनतम वेतन में वृद्धि व 18000 रूपये प्रतिमाह न्यूनतम वेतन का विरोध किया। नियोक्ताओं के एक प्रतिनिधि ने सुझाव दिया कि केन्द्र सरकार को कार्यान्वयन के लिए वेतन व वेतन सुरक्षा व्यवस्था के केरल मॉडल को अपनाना चाहिये। उसने कहा, ''हमारे पास केरल में कुछ उद्योग हैं और हमें न्यूनतम वेतन लागू करने में कोई मुश्किल नहीं आ रही।'' उसने केरल में वेतन सुरक्षा व्यवस्था के कार्यान्वयन के बारे में कुछ प्रासंगिक बिन्दु सामने रखेः

- **वेतन सुरक्षा व्यवस्था (डब्ल्यू पी एस) –** डब्ल्यू पी एस के माध्यम से, कुछ अनुसूचित रोजगारों के नियोक्ताओं को आयुक्त स्वचालित व्यवस्था के माध्यम से फार्म xiv में पंजीकरण के तहत रोजगार व वेतन की जानकारी देनी (अपलोड करनी) होती है।

- श्रम आयुक्त द्वारा अधिकृत निरीक्षक को फार्म xiv की पंजिका को इलेंक्ट्रानिकली ऑथेन्टिकेट करना चाहिये, जो पार्टल में अपलोड की गयी है।
- एक बार प्रमाणित हो जाने पर, नियोक्ता उसकी प्रिंट कॉपी ले सकता है और उसकी स्वहस्ताक्षरित प्रति रख सकता है या उसे इलेक्ट्रानिकली स्टोर रख सकता है।
- निरीक्षण के समय, नियोक्ता इसकी प्रिंट कॉपी लेकर जाँच– पड़ताल के लिए दे सकता है।
- संबंधित मुख्य बैंकर को भुगतान डब्ल्यू पी एस (लेबर कमिश्नर ऑटोमेशन सिस्टम) के जरिये किया जाना चाहिए।

नियोक्ता के लिए लाभ

- वेतन पंजिका, रोजगार पंजिका, जुर्माना पंजिका, वेतन पर्ची आदि को हार्ड कॉपी के रूप में संजोने की जरूरत नहीं।
- नियोक्ता सुनिश्चित कर सकते हैं कि कर्मचारियों को सही वेतन प्राप्त हुआ।
- वेतन संबंधी कर्मचारियों की शिकायतों से बचा जा सकता है।
- श्रम विभाग की और से निरोक्षणों में कमि आयेगी।

कार्यान्वयन न होने के परिणाम

- प्राधिकार वेतन सुरक्षा व्यवस्था का कार्यान्वयन न करने के लिए हर प्रतिष्ठान को नोटिस जारी कर सकता हैं।
- यदि विभिन्न अधिनियमों के तहत जारी नोटिस व वेतन सुरक्षा व्यवस्था की पालना न होना देखने में आता है, तो वेतन सुरक्षा व्यवस्था पर अमल किये जाने तक नोटिस प्रभावी बना रहेगा और उसके बाद मामला कोर्ट में भेजा जा सकता है।
- क्लोजर के नोटिस के लिए दिये गये दस्तावेजों को संबंधित अथारिटी द्वारा, वेतन सुरक्षा व्यवस्था का कार्यान्वयन किये जाने तक स्वीकार नहीं किया जायेगा।

वर्तमान परिदृश्य

- वेतन सुरक्षा व्यवस्था का कार्यान्वयन न किये जाने के साथ– साथ विभिन्न अधिनियमों के तहत अन्य उल्लंघनों के लिए अथारिटी नोटिस को कोर्ट में भेज सकती है।

वेतन की न्यूनतम दरों को ' राष्ट्रीय प्लोर लेबर न्यूनतम वेतन' से कम तय न किये जाने के मुद्दे को भी बैठक में रखा गया। यह बताया गया कि राष्ट्रीय प्लोर स्तरीय वेतन को अंतिम बार, मजदूर वर्ग के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक के 12 महिने के औसत के आधार पर 01.06.2017 से प्रभावी 176 रूपये प्रतिदिन के हिसाब से पुननिर्धारित किया गया। सीटू प्रतिनिधि ने बैठक को याद दिलाया कि बोर्ड की पिछली बैठक में यह तय किया गया था कि राष्ट्रीय फ्लोर स्तरीय न्यूनतम वेतन के एजेंडे को आगामी बैठकों में नहीं रखा जायेगा। राष्ट्रीय फ्लोर स्तरीय न्यूनतम वेतन की कोई वैधानिक शक्ति नहीं है और इससे शोषको को मौका मिलेगा। केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों के सभी प्रतिनिधियों ने इस विषय को कार्यसूची से हटाने की माँग की।

बैठक में सर्वसम्मति से यह तय किया गया कि आई आई टी, एन आई टी, जवाहर नवोदय विद्यालयों तथा केन्द्र सरकार की सभी संबंधित संस्थाओं व अस्पतालों आदि की मेस/कैन्टीनों में कार्यरत मजदूरों के लिए रोजगार की अलग अनुसूची बनायी जाये। यह भी सहमति बनी कि रेलवे के ठेका मजदूरों व घर आघारित मजदूरो के लिए रोजगार की अलग अनुसूची बने।

केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों के सभी प्रतिनिधियों ने अरूणाचल प्रदेश, गोवा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू व कश्मीर, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नगालैंड जैसे कुछ राज्यों द्वारा उपभोक्ता मूल्य यूचकांक से जुड़े परिवर्तनीय मंहगाई भत्ते के प्रावघान को नही अपनाये जाने पर चिंता प्रकट की। इनमें से अधिकतर राज्य भाजपा शाषित है। मंहगाई से मजदूरों के न्यूनतम वेतन को सुरक्षित करने के लिए सी पी आई से जुड़े वी डी ए के प्रावघान को स्वीकारना होगा। केन्द्रीय ट्रेड युनियन प्रतिनिधियों की इस आशा के साथ कि बोर्ड की सिफारिशों में न्यूनतम वेतन 18000 रूपये प्रतिमाह करना शामिल होगा और इसे केन्द्र सरकार द्वारा स्वीकार किया जायेगा के साथ बैठक का समापन हुआ।

राज्यों में ट्रेड यूनियनों के संयुक्त कन्वेंशन

भारत के मजदूर वर्ग की पृष्ठभूमि, मुद्दों व मांगों पर जमीनी स्तर पर अभियान की तैयारियों तथा मोदी सरकार की मजदूर–विरोधी व जन–विरोधी नीतियों व कार्रवाईयों को चुनौती देने के लिए दिल्ली में 9–11 नवम्बर 2017 के अखिल भारतीय महापड़ाव में लामबंदी के लिए, 10 केंद्रीय ट्रेड यूनियनों व राष्ट्रीय व राज्य फैडरेशनों व यूनियनों की राज्य इकाईयों ने 8 अगस्त के मजदूरों के राष्ट्रीय कन्वेंशन के आह्वान के प्रत्युत्तर में मजदूरों के राज्य स्तरीय, निचले स्तरों पर व उद्योग स्तरीय कन्वेंशनों का आयोजन किया। इस संबंध में सीटू केंद्र को प्राप्त हुई कुछ रिपोर्टें :

मध्य प्रदेश

केंद्रीय ट्रेड यूनियनों व केंद्र तथा राज्य सरकार कर्मचारियों, बैंक, बीमा, बीएसएनएल, रक्षा, भेल व अन्य सार्वजनिक उपक्रमों की फैडरेशनों ने 7 अक्टूबर को भोपाल के गांधी भवन में राज्य स्तरीय संयुक्त कन्वेंशन का आयोजन किया।

सीटू के राज्य महासचिव प्रमोद प्रधान ने पृष्ठभूमि व मुद्दों का खुलासा करते हुए तथा इस बारे में ट्रेड यूनियनों द्वारा संयुक्त रूप से राष्ट्रीय स्तर पर चलाए जा रहे आंदोलन के बारे में बताते हुए कन्वेंशन का प्रस्ताव पेश किया। एटक के राष्ट्रीय सचिव विद्यासागर गिरी ने कंवेंशन के मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित करते हुए राज्य के मजदूरों से 9 से 11 नवंबर के लिए दिल्ली में होने वाले महापड़ाव में भारी संख्या में भाग लेने तथा अगले वर्ष अनिश्चितकालीन हड़ताल के लिए तैयार रहने का आहवान किया। प्रस्ताव के समर्थन में कंवेंशन को संबोधित करने वाले राज्य नेताओं में इंटक के राम राज तिवारी, यू टी यू सी के जे सी बराई, सेवा की बसंती मालवीय, बैंक यूनियनों के वी के शर्मा, एआई आईईए के नबेंदु चक्रवर्ती, बी एस एन एल यू के एस एस ठाकुर, केंद्र सरकार कर्मचारियों के आर एस बघेल शामिल थे। सीटू के राज्य अध्यक्ष रामविलास गोस्वामी कन्वेंशन के अध्यक्ष मंडल में थे।

छत्तीसगढ़

केंद्रीय ट्रेड यूनियनों व राष्ट्रीय तथा राज्य फैडरेशनों व यूनियनों की राज्य इकाइयों का एक संयुक्त कन्वेंशन 24 सितंबर को राज्य की राजधानी रायपुर में जे एन पांडे स्कूल के सभागार में हुआ। कंवेंशन में राज्य के विभिन्न भागों से बैंक, बीमा, राज्य सरकार, रेलवे, कोयला, स्टील, इलेक्ट्रिसिटी, आंगनवाड़ी आदि समेत संगठित व असंगठित क्षेत्र के सैकड़ों प्रतिनिधि शामिल हुए। मजदूरों से दिल्ली में महापड़ाव में भारी संख्या में शामिल होने तथा मांगों को लेकर अगले वर्श अनिश्चितकालीन हड़ताल की तैयारी करने के आह्वान वाला मुख्य प्रस्ताव सीटू के राज्य सचिव धर्मराज महापात्र ने पेश किया। मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए एक्टू के महासचिव राजीव डीमरी ने ट्रेड यूनियनों की 12 सूत्री मांगों के बारे में बताया। एटक के राज्य महासचिव हरनाथ सिंह, सीटू राज्य महासचिव ए के लाल, इंटक राज्य अध्यक्ष संजय सिंह तथा एक्टू के भीमराव बागड़े समेत राज्य नेताओं ने कन्वेंशन को संबोधित किया। तृतीय श्रेणी सरकारी कर्मचारियों की यूनियन के राज्य अध्यक्ष राकेश साहू, आर डी आई ई ई यू महासचिव अतुल देशमुख, बी एस एन एल ई यू के एसपी भट्टाचार्य तथा छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा के लक्ष्मण साहू ने कन्वेंश को संबोधित किया।

राज्य स्तरीय मुद्दों के बारे में अलग प्रस्तावों के माध्यम से कन्वेंशन ने राज्य में कॉरपोरेटों द्वारा सुरक्षा उपायों की अवहेलना करने के चलते होने वाली दुर्घटनाओं में मजदूरों की बढ़ती संख्या के मुद्दे पर आंदोलन तेज करने, नियोक्ताओं के दबाव में अधिसूचित न्यूनतम वेतन को वापस लेने के लिए सरकार की निंदा करने तथा न्यूनतम वेतन लागू करने के लिए आंदोलन शुरू करने का फैसला लिया गया। 50 वर्ष की आयु या 20 वर्ष की सेवा पूरी करने पर राज्य सरकार द्वारा जबरन सेवानिवृत्त करने का तानाशाही या फासीवादी कदमों द्वारा सांप्रदायिक विभाजन को बढ़ावा देकर बढ़ते गुस्से से जनता का ध्यान बंटाने के लिए सरकार की भर्त्सना की गई। कन्वेंशन

के अध्यक्ष मंडल में इंटक के राम अवतार अलगमकर, सीटू के एस पी डे, एटक के आर डी सी पी राव, एक्टू के बी एल नेताम तथा राज्य सरकार कर्मचारियों की यूनियन के नेता नरेंद्र चंद्राकर शामिल थे।

ओडिशा

केंद्रीय ट्रेड यूनियनों व फेडरेशनों का राज्य स्तरीय संयुक्त कन्वेंशन 23 सितंबर को भुवनेश्वर में इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियर्स के सभागार में हुआ। जिसमें नवंबर के दिल्ली महापड़ाव में मजदूरों में भारी संख्या में भाग लेने का आह्वान किया गया। सीटू के राज्य महासचिव विष्णु मोहंती ने मोदी सरकार के मजदूर विरोधी श्रम कानून संशोधनों व ट्रेड यूनियनों की 12 सूत्री मांगों की चर्चा करते हुए कन्वेंशन की शुरुआत की। एटक राज्य महासचिव सॉरी बंधु ने कन्वेंशन का घोषणा पत्र प्रस्तुत किया। कन्वेंशन को सीटू के शिवाजी पटनायक, एटक के आर के पांडा, एक्टू के राधाकांत सेठी, बेफी के सुशील गिरी, ए ओ बी ई एफ के जयंता पति, सी सी डी ई डब्लू के आर एन धर, ओ उस जी आई ई ए के बामदेव मिश्रा, एन एफ पी ई के बष्हस्पति समाल व अन्य ने संबोधित किया। कन्वेंशन ने अक्टूबर में जिलों में ऐसे ही कन्वेंशनों के आयोजन का फैसला किया।

कन्वेंशन के अध्यक्षयमंडल में सीटू के लंबोदरनायक, इंटक के अक्षय त्रिपाठी, एटक के अशोक दास, एच एम एस के बिद्याधर बरिक, ए आई यू टी यू सी के शंभुनाथ नायक तथा एक्टू के नित्या किशोर मोहंती शामिल थे।

पंजाब

पंजाब की ट्रेड यूनियनों के संयुक्त आहवान पर चंडीगढ़ के भखना भवन में एक प्रभावशाली संयुक्त कन्वेंशन आयोजित किया गया। सीटू राज्य अध्यक्ष विजय मिश्रा, एटक राज्य अध्यक्ष बंत ब्रारा, इंटक राज्य उपाध्यक्ष मंगत खान, एक्टू राज्य अध्यक्ष अमरीक सिंह व इन्दरजीत सिंह ग्रेवाल ने संयुक्त रूप से कन्वेंशन की अध्यक्षता की।

कन्वेंशन को सीटू के राज्य महासचिव रघुनाथ सिंह, एटक राज्य महासचिव बंत बरार, एक्टू के राजविन्दर सिंह राना तथा सी टी यू पंजाब के महासचिव नत्था सिंह ने संबोधित किया।

कन्वेंशन ने 16 अक्टूबर से उपायुक्त कार्यालयों के सामने रैलिया करने के संयुक्त अभियान को शुरू करने व जिलों में कन्वेंशन करने का आहवान किया।

सीटू के स्वतंत्र जत्थे: दिल्ली में मजदूरों के महापड़ाव के लिए अभियान व लामबंदी के लिए राज्य पदाधिकारियों के नेतृत्व में सीटू ने स्वतन्त्र रूप से राज्यव्यापी जत्थे निकाले जिन्हें राज्य भर में व्यापक समर्थन मिला।

राजस्थान

इंटक, एटक, एच एम एस, सीटू व राजस्थान सीटू की राज्य इकाईयों ने संयुक्त रूप से 7 अक्टूबर को जयपुर में मजदूरों का राज्य स्तरीय कन्वेंशन आयोजित किया। इसमें राज्य के अलग–अलग हिस्सों से लगभग 500 ट्रेड यूनियन कार्यकर्ता शामिल हुए। कन्वेंशन के मुख्य वक्ताओं के रूप में इंटक के राष्ट्रीय नेता जगदीश श्रीमाली, एटक की राष्ट्रीय सचिव अमरजीत कौर, सीटू के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जे एस मजुमदार तथा राज.सीटू के रामपाल सैनी ने संबोधित किया।

वक्ताओं ने मजदूरों, किसानों व जनता की बढ़ती मुश्किलों; सामाजिक सुरक्षा पर हमला व सब्सिडी में कटौती; रोजगारों के छिनने व बेरोजगारी; रेलवे समेत विभिन्न क्षेत्रों का बड़े पैमाने पर निजीकरण; साम्प्रदायिक विभाजन व बढ़ती निरंकुशता आदि की चुनौतियों की ओर ध्यान खींचा तथा मजदूरों से 9–11 नवम्बर के दिल्ली में होने वाले महापड़ाव को ऐतिहासिक रूप से सफल बनाकर, सरकार को मजदूरों के प्रतिरोध का मजबूत संदेश देने का आहवान किया।

कन्वेंशन को कन्द्रीय ट्रेड यूनियनों के राज्य नेताओं बिनोद मेहता, एम एस यादव, अनिल व्यास, रविन्द्र शुक्ला, रमेश, डी के इंगाणी, एस के शर्मा, बी एस राणा, पी एस परमार, आर के सिंह तथा बैंक यूनियन के महेश मिश्रा ने भी संबोधित किया।

उत्तराखंड

उत्तराखंड संयुक्त ट्रेड यूनियन समन्वय समिति ने 8 अक्टूबर को देहरादून की शिवाजी धर्मशाला में संयुक्त राज्य स्तरीय ट्रेड यूनियन कन्वेंशन का आयोजन किया जिसमें इंटक, एटक, एच एम एस, सीटू, एक्टू, यू टी यू सी के कार्यकताओं तथा रक्षा, केन्द्र सरकार, बैंक व बीमा यूनियनों के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

कन्वेंशन का संचालन समन्वय समिति के संयोजक व सीटू के राज्य कोषाध्यक्ष वीरेन्द्र भंडारी ने किया। कन्वेंशन को एटक के राष्ट्रीय सचिव बंत सिंह बरार, इंटक के राज्य अध्यक्ष व पूर्व विधायक हीरा सिंह बिष्ट, सीटू राज्य महासचिव महेन्द्र प्रसाद जखमाला, एटक के समर भंडारी, एक्टू के चंदौला, रक्षा क्षेत्र के जगदीश चन्द्र द्विम्बल, बैंक के मुरारी लाल नौटियाल व अन्य ने संबोधित किया।

कन्वेंशन में केन्द्र सरकार के समक्ष रखी गयी 12 मांगों व राज्य सरकार के सामने रखी गयीं 12 मांगों पर प्रस्ताव पारित किया गया।

कन्वेंशन की अध्यक्षता बंत सिह बरार, अशोक शर्मा, हीरा सिंह बिष्ट, सीटू राज्य उपाध्यक्ष महावीर शर्मा, एच एम एस के उग्रसेन, रक्षा क्षेत्र के चंदेला, पूरन सिंह, बैंक के सोहन सिंह राजवर तथा केन्द्र सरकार कर्मचारियों के कुल बहादुर कारकी ने की।

आंध्रप्रदेश

विजयवाड़ा में 10 सितम्बर को हुए राज्यस्तरीय संयुक्त ट्रेड यूनियन कन्वेंशन में इंटक, एटक, एच एम एस सीटू, टी यू सी सी, ए आइ यू टी यू सी, इफ्टू व वाई एस आर टी यू के लगभग 600 कार्यकर्ता शामिल हुए। केन्द्रीय व राज्य सार्वजनिक क्षेत्र, बी एस एन एल, बैंक व बीमा के प्रतिनिधियों ने भी कन्वेंशन में भाग लिया।

पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल से करीब 9,000 मजदूर दिल्ली में 9–11 नवम्बर को होने वाले ऐतिहासिक महापड़ाव में हिस्सा लेंगे तथा एकजुटता प्रदर्शित करते हुए मजदूरों व मेहनतकशों के सभी तबके कारखानों,मजदूरों की बस्तियों व राज्य के औद्योगिक इलाकों में इन सभी दिनों में प्रदर्शन करेंगे, सीटू के राज्य महासचिव अनादि कुमार साहु ने 13 अक्टूबर को कोलकाता में युवा केन्द्र सभागार में हुए केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों व राष्ट्रीय फेडरेशनों के राज्य स्तरीय संयुक्त कन्वेंशन के समापन के अवसर पर यह एलान किया। 9 नवम्बर को कोलकाता में एक रैली निकाली जायेगी।

ऐसे संयुक्त कन्वेंशन उद्योगस्तर पर व जिलास्तर पर भी 18 अक्टूबर तक किये जाने का निर्णय लिया गया। राज्य में बी पी एस ओ की रैली के समापन के तुरन्त बाद से 9 नवम्बर तक व्यापक अभियान जारी रहेगा जिसमें राज्य भर में गेट मीटिंगे, नुक्कड़ सभायें, रैलियां, परचे बांटना शामिल रहेगा।

कन्वेंशन को संबोधित करने वालों में सीटू के राज्य अध्यक्ष सुभाष मुखर्जी, इंटक के राज्य अध्यक्ष रमेश पांडे, यू टी यू सी के अशोक धोष, एक्टू के बासुदेब बसु, एटक के उज्जवल चौधरी, ए आइ यू टी यू सी के क्रांति घोष, टी यू सी सी के श्यामल कानूनगो; तथा बेफी के जॉयदेब दासगुप्ता मर्केन्टाईल फेडरेशन के बिनय कृष्ण चटर्जी, स्टील वर्कर्स फेडरेशन के पी के दास, 12 जुलाई कमेटी के समीर भट्टाचार्जी बी एस एन एल ई यू के अनिमेष मिश्रा, ई आर उम यू की प्रिया नाथ रॉय व डिफेंस एम्पलाइल फेडरेशन के द्विजेन्द्र नाथ साहू शामिल थे।

राज्य केन्द्र से अभियाान प्रचार सामग्री के रूप में 35000 पोस्टर, 50000 परचें, 10000 पेम्फलेट जारी किये जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, सभी जिला समितियां व फेडरेशन भी बैनरों तथा होर्डिंगों समेत ऐसी प्रचार सामग्री तैयार कर रही हैं।

कन्वेंशन के अध्यक्षमंडल में सुभाष मुखर्जी रणजीत गुहा, अमरसेन, प्रदीप बनर्जी, अतनु चक्रबर्ती, बिद्युत पोद्दार, अनूप चक्रबर्ती व अशोक घोष शामिल थे।

राज्य

तेलंगाना

बीड़ी मजदूरों का आंदोलन

सीटू की तेलंगाना बीड़ी व सिगार वर्कर्स यूनियन ने बीड़ी से जी एस टी हटाये जाने, न्यूनतम वेतन, गुजारे भत्ते के लिए नोटबंदी आंदोलन के दौरान मंडल मुख्यालयों में ऑनलाइन भुगतान के खिलाफ 8 जून को जिला मुख्यालयों पर धरने आयोजित किये।

यूनियन ने न्यूनतम वेतन के लिए सरकारी आदेश संख्या 8 को वापस लिए जाने तथा जी ओ संख्या 41 को लागू करने की मांग करते हुए 12 जुलाई को राज्य श्रमायुक्त कार्यालय पर राज्य स्तरीय धरना आयोजित किया। इसमें 28 मंडलों से आये लगभग 1500 बीड़ी मजदूर शामिल हुए। अभियान के दौरान यूनियन ने 75000 परचे वितरित किये। *(योगदानः एस रमा)*

उद्योग व क्षेत्र

केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र

केन्द्रीय सार्वजनिक उद्यमों की राष्ट्रीय कार्यशाला

केन्द्रीय सार्वजनिक उद्यमों की यूनियनों की एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन 22 अक्टूबर को सुन्दरैया विज्ञान केन्द्रम् हैदराबाद में किया गया जिसमें केन्द्रीय ट्रेड़ यूनियनों के राष्ट्रीय नेताओं सहित केन्द्रीय सार्वजनिक उद्यमों (सी.पी.एस.यू.) के करीब 200 नेताओं और कार्यकर्ताओं, जिनमें विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों के सी.पी.एस.यू. के 149 नेताओं और कार्यकताओं ने प्रतिनिधित्व किया और हैदराबाद के सी.पी.एस.यू. की यूनियनों के कार्यकर्ताओं ने शिरकत की।

इन्टक अध्यक्ष जी. संजीवा रेड्डी ने अपने उद्घाटन प्रस्तुतिकरण के साथ चर्चा शुरु की। सीटू महासचिव तपन सेन ने एक पृष्ठभूमि दस्तावेज प्रस्तुत किया। एटक के एच. महादेवन, एचएमएस के जी. येलियाह, एल.पी.एफ. के एस. सुब्बरामन, बैंगलोर के सी.पी.एस.यू. के जे.ए. एफ. के संयोजक मीनाक्षी सुंदरम् और हैदराबाद पीएसयू समन्वय समिति के संयोजक ने भी अपने हस्तक्षेप से चर्चा में योगदान दिया।

अध्यक्ष मण्डल की ओर से, सीटू के राष्ट्रीय सचिव स्वदेश देव रॉय ने सभी घटक संगठनों द्वारा हस्ताक्षरित 'कार्यशाला के निष्कर्ष' को रखा। यह सर्वसम्मति से पारित किया गया।

कार्यशाला के निष्कर्ष

इस संयुक्त राष्ट्रीय कार्यशाला में केन्द्रीय सार्वजनिक उद्यमों में सक्रिय सभी सम्बद्धताओं की यूनियनों के नेतृत्वकारी प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यशाला ने पूरी गम्भीरता से यह रेखांकित किया है कि पूरे सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों और कार्यरत कर्मचारियों के खिलाफ एन.डी.ए. सरकार शत्रुतापूर्ण और विनाशकारी नीतियाँ अपना रही है।

वर्तमान नीति व्यवस्था, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की गौरवशाली ढंग की सेवा करने वाले देश के पूरे सार्वजनिक क्षेत्र के नेटवर्क को, विनिवेश/निजीकरण/स्ट्रेटेजिक सेल आदि विभिन्न तौर तरीकों के माध्यम से पूरी तरह से खत्म करने की कोशिश कर रही है। ऐसे कदम राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और आम जनता के हितों के लिए पूरी तरह से हानिकारक हैं। सी.पी.एस.यू. कर्मचारी पहले से ही इस तरह की नीतियों के खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं।

साथ ही साथ, सरकार श्रम कानूनों में व्यापक बदलाव के जरिए, मजदूरों पर आभासी दासता थोपकर उनके प्रमुख एवं बुनियादी अधिकारों को छीन लेने की नीति पर भी चल रही है। भारत सरकार द्वारा डिजाइन किए गए वेतन विधेयक कोड, औद्योगिक संबंध विधेयक कोड और सामाजिक सुरक्षा विधेयक पर कोड पहले से ही जनता के समक्ष लाए जा चुके हैं, जो सरकार के बुरे इरादों को स्पश्ट रूप से दर्शाते हैं।

इस संबंध में कार्यशाला सभी त्रिपक्षीय और द्विपक्षीय मंचों में इंटक की भागीदारी पर गैर–लोकतांत्रिक प्रतिबंध के लिए एन.डी.ए. सरकार की निंदा करता है। देश के सबसे बड़े केंद्रीय ट्रेड यूनियन के खिलाफ इस तरह का चौंकाने वाला कदम स्पष्ट रूप से एन.डी.ए. सरकार के ट्रेड यूनियन आंदोलन के खिलाफ सत्तावादी और प्रतिवादी दृष्टिकोण को दर्शाता है। हमें इसे अपनी पूरी एकजुटता के साथ लड़ना होगा।

सरकार ने सी.पी.एस.यू. के अधिकारियों के लिए वेतन संशोधन अधिसूचना जारी की है, न्यायमूर्ति सतीश चंद्र समिति की सिफारिशों की स्वीकृति, ''सामर्थ्य(अफोर्डेविलिटी)'', ''वित्तीय असर'', ''कड़ी शर्त सहित फिटमेंट फॉर्मूला'' ''10 वर्श की अवधि''; सामर्थ्य के नाम पर बड़ी संख्या में उन सी.पी.एस.यू. के वेतन संशोधन से इन्कार, जो अर्थव्यवस्था के मुख्य और सामरिक क्षेत्रों में और उत्कृष्ट भौतिक प्रदर्शन के बावजूद भी उनका वित्तीय प्रदर्शन, बेहतरीन भौतिकशारीरिक प्रदर्शन के अनुरुप नहीं है। बीमार पी.एस.यू. के बारे में कुछ भी नहीं बोला गया है।

ध्यान रहे कि क्षमताओं के बावजूद, सी.पी.एस.यू. की लाभप्रदता, केवल सरकार की पीएसयू विरोधी और निजी–कॉरपोरेट एवं एम.एन.सी. समर्थक नीतियों के कारण ही पूरी तरह नहीं हो पा रही है। अधिकांश बीमार सी.पी.एस.यू. केंद्र की मोदी सरकार की शत्रुतापूर्ण

नीतियों के कारण ही बीमार हो गए हैं। सी.पी.एस.यू. में सम्बद्धता के बावजूद ऐसी स्थिति को ट्रेड यूनियन आंदोलन स्वीकार नहीं कर सकता है। एन.डी.ए. सरकार के ऐसे घृणित कदमों के खिलाफ सभी मजदूरों/कर्मचारियों को लामबन्द किया जाना चाहिए।

कार्यशाला ने सर्वसम्मति से निष्कर्ष निकाला है कि उक्त वर्णित चुनौतीपूर्ण स्थिति में हमें आगामी 8वें दौर की वेतन–संषोधन की वार्ताऐं करनी होगी। सी.पी.एस.यू. कार्मिकों के वेतन, भत्तों, अनुलाभों (पर्कस्), सामाजिक सुरक्षा लाभों में संतोषजनक संषोधन करने के अपने अधिकार से वंचित करने की सरकारी साजिशों को परास्त करने के लिए; सम्बद्धताओं से ऊपर उठकर सी.पी.एस.यू. कार्मिकों की 'एकता और संघर्ष' बहुत जरूरी है। कोयला वेतन संशोधन समझौता, निश्चित रूप से हमारे लक्ष्य को हासिल करने के लिए हमें बड़ा लाभ देगा।

इसके अलावा, सी.पी.एस.यू. कार्मिकों और यूनियनों की संयुक्त राष्ट्रीय कार्यशाला सर्वसम्मति से निम्नलिखित मूलभूत आवश्यकताओं को तैयार किया है, जिनका पालन और क्रियान्वयन सभी सी.पी.एस.यू. यूनियनों द्वारा वेतन–वार्ता प्रक्रिया सहित अपनी सामूहिक गतिविधियों में करना हैः

- सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों का विनिवेश/निजीकरण/स्ट्रैटेजिक सेल बन्द हो!
- सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में स्थायी और बारहमासी प्रकृति के कार्यों में ठेकेदारी/आउटसोर्सिंग पूरी तरह से बन्द हो!
- बीमार सार्वजनिक उपक्रमों के पुनरुद्धार और संबंधित कर्मचारियों के वेतन संशोधन के लिए वित्तीय और नीतिगत समर्थन हो!
- वेतन संशोधन समझौते की अवधि 5 वर्श से अधिक नहीं होनी चाहिए जैसा कि पहले ही उपर्युक्त छह सी.पी.एस.यू. द्वारा हासिल किया गया है!
- मजदूरों की श्रेणी के लिए वेतन संषोधन में, अफसरों के वेतन की सापेक्षता में सुधार मजदूरों के पक्ष में करना सुनिश्चित करना हो!
- वेतन संशोधन पर डीपीई दिशानिर्देषों के माध्यम से थोपे गऐ मजदूर–विरोधी नियम और शर्तों को संयुक्त संघर्षों के द्वारा सभी सी.पी.एस.यू. के वेतन–वार्ता मंचों पर पूरी तरह से विरोध किया जाऐ।
- वेतन, भत्ते, अन्य मौद्रिक और गैर–मौद्रिक लाभों में वृद्धि के संशोधन को उत्पादकता न जोड़ा जाऐ;
- अलग प्रोत्साहन योजना और प्रदर्शन संबंधित भुगतान (पीआरपी) को उत्पादकता के साथ न जोड़ा जाए!
- सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में ठेका मजदूरों के वेतन में वृद्धि, सभी संबंधित सार्वजनिक उपक्रमों में स्थायी श्रमिकों को उपलब्ध न्यूनतम वेतन और हितलाभ सुनिश्चित हो!
- नियमित कार्मिकों की नई भर्ती के माध्यम से सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में कामगार श्रेणी की सभी रिक्तियों को भरा जाऐ।

सभी सी.पी.एस.यू. यूनियनें संबंधित सी.पी.एस.यू. में द्विपक्षीय वार्ताओं में भाग लेने के दौरान आपस में नजदीकी समन्वय और जानकारी के आदान–प्रदान को मजबूत करना है। और सभी सी.पी.एस.यू. में हमें वेतन वार्ताओं की प्रक्रिया के दौरान, न्यायमूर्ति सतीश चंद्र समिति और संबंधित डीपीई दिशनिर्देषों की पूरी तरह से नकारात्मकता और बेहद प्रतिबंधात्मक सिफारिशों को पराजित करने के लिए गंभीर सामूहिक प्रयास करने चाहिए। इस कार्यशाला की अपील है कि सभी सार्वजनिक क्षेत्र के कर्मचारी 9–11 नवंबर 2017 को संसद भवन, नई दिल्ली के निकट तीन दिवसीय 'क्रमिक धरने' में सक्रिय रूप से भाग लें ताकि लाखों मजदूरों की भागदारी के लक्ष्य, देश के सभी केन्द्रीय ट्रेड़ यूनियनों और राष्ट्रीय महासंघों द्वारा अपनाऐ गए 12 सूत्रीय माँग पत्र (पीएसयू कार्मिकों की उपरोक्त मांगें भी प्रमुखता से शामिल है) के लिए सरकार पर दबाव बनाया जा सके।

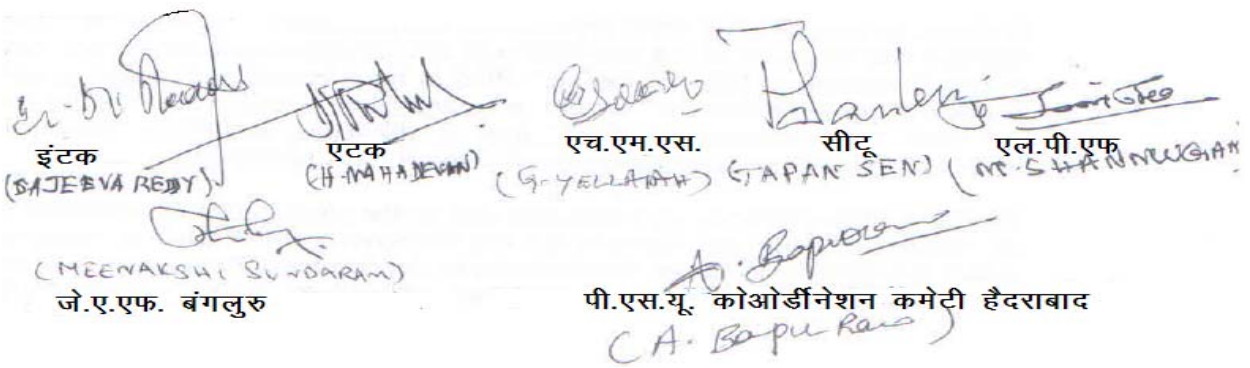

केरल में सार्वजनिक उद्यमों के निजीकरण के खिलाफ आन्दोलन

राज भवन मार्च

केंद्रीय ट्रेड यूनियनों – सीटू, इन्टक, एच.एम.एस., एटक, यू.टी.यू.सी., ए.आई.यू.टी.यू.सी., सेवा की सार्वजनिक क्षेत्र की समन्वय समिति द्वारा आयोजित एक विशाल रैली 13 सितंबर को तिरुवनंतपुरम में राज भवन के सामने आयोजित की गयी। जिसमें टी.यू.सी.आई., एन.टी.यू.आई., के.टी.यू.सी., ए.आई.सी.टी.यू., एन.एल.ओ., जे.टी.यू.सी., एन.एल.सी., और आई.एन.एल.सी. भी शामिल रही। इस रैली में सार्वजनिक क्षेत्र के लगभग 15,000 कर्मचारी, निजी एवं असंगठित क्षेत्र के मजदूर शामिल हुए और बीएसएनएल, हिंदुस्तान न्यूजप्रिंट, हिंदुस्तान लेटेक्स, और कोचीन शिपयार्ड के प्रस्तावित विनिवेश सहित केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र इकाइयों (सी.पी.एस.यू.) का निजीकरण और विनिवेश रोकने; पीएसयू को कार्यशील पूंजी की अनुमति; एच.ओ.सी. मजदूरों के 10 महीने के वेतन का भुगतान करने; एफ.ए.सी.टी. के ऋण पर दंडात्मक ब्याज को 13.5% से कम करके 4% तक करने; एच.एम.टी., एच.आई.एल., आई.आर.ई. का बचाव करने; बंदरगाह प्राधिकरण विधेयक को वापस लेने; रक्षा क्षेत्र में पीपीपी गतिविधियों को रोकने, कोचीन बंदरगाह बचाने; रेलवे आदि का निजीकरण रोकने की माँग की गयी।

इस मार्च का उद्घाटन करते हुए, सीटू के राज्य अध्यक्ष अनंतलावत्तम आनंदन ने कहा कि सी.पी.एस.यू. में 13 लाख स्थायी कर्मचारियों और 20 लाख ठेका कर्मचारियों की नौकरी की सुरक्षा पर खतरा है। सी.पी.एस.यू. देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। केंद्र सरकार ने हिंदुस्तान लेटेक्स, हिंदुस्तान न्यूजप्रिंट्स और हिंदुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स को बेचने का फैसला किया है। केंद्र ने रेलवे के निजीकरण के लिए तेज कदम उठाने शुरु किए है। रेलवे स्टेशनों का प्रबंधन जल्द ही निजी कंपनियों को सौंप दिया जाएगा।

इन्टक के राज्य अध्यक्ष आर. चंद्रशेखरन ने अध्यक्षता की और एटक के राज्य सचिव जे. उदयभानु, सीटू के राष्ट्रीय सचिव के. चंद्रनपिल्लई, सीटू के के.एन. गोपीनाथ और अन्य ने रैली को भी संबोधित किया। मांगों पर एक ज्ञापन राज्यपाल पी. सतशिवम् को सौंपा गया।

एरनाकुलम जिले में, 7–8 सितंबर को एक संयुक्त जीप जत्था चलाया गया। सीटू के के.एन. गोपीनाथ, इन्टक के के.के. इब्राहिमकुट्टी, एस.टी.यू. के रेगुनाथ पानावेली, एटक के के.एन. गोपी, टी.यू.सी.आई. के टी.बी. मिनी ने जत्थे का नेतृत्व किया। के चंद्रनपिल्लई ने कोचीन रिफाइनरी और हिंदुस्तान कार्बनिक केमिकल्स के गेट के सामने जत्थे का उद्घाटन किया।

बी.ई.एम.एल. के निजीकरण के खिलाफ 'मशाल' रैली

सीटू के आयोजन पर, पूरे पालघाट जिले के 20,000 मजदूर 7 अक्टूबर को पालघाट शहर में विशाल मशाल रैली में शामिल हुए, जिसमें केंद्र सरकार द्वारा बी.ई.एम.एल. के निजीकरण के कदम के खिलाफ विरोध और सी.पी.एस.यू. की अन्य मांगों के लिए प्रदर्शन किया गया। जिसमें केरल सरकार द्वारा इन्स्ट्रूमेन्टेशन पलघाट के अधिग्रहण; भारतीय टेलीफोन उद्योग और द्रव नियंत्रण आदि के बचाव की माँग की गयी।

सीटू के राष्ट्रीय सचिव और राज्य के महासचिव एलामरम् करीम ने 'मशाल रैली' का उद्घाटन किया। के. चंद्रनपिल्लई, सांसद एम.बी. राजेश, आर.जी. पिल्लई, एम. चंद्रान, हम्सा, अच्युतान, टी.के. प्रभाकरण, उन्नी पी., के.के. दिवाकरन ने रैली को संबोधित किया

'मशाल रैली' के लिए दो जिलों में जत्थों का प्रचार किया गया, जिसका उद्घाटन सीटू राष्ट्रीय सचिव के. चंद्रनपिल्लई और के. के. दिवाकरन ने किया।

एच.एन.एल. बचाओ धरना

केरल के कोट्टायम जिले के वेल्लूर में 11 अक्टूबर को हिंदुस्तान न्यूज प्रिंट गेट के सामने बड़े पैमाने पर धरना में एच.एन.एल. और एफ.ए.सी.टी., शिपयार्ड, एच.ओ.सी., एच.आई.एल., एच.एम.टी., कोचीन बंदरगाह, बी.एस.एन.एल. और अन्य कर्मचारियों से लगभग 2,000 मजदूर कार्यकर्ता शामिल हुए।सीटू राज्य महासचिव एलामरम् करीम ने धरने का उद्घाटन किया और के. चंद्रनपिल्लई, के.एन. गोपीनाथ, एम.जी. अजी, टी. रघुनाथ, एडवोकेट पी.के. हरिकुमार, एच.एन.एल. यूनियन के मोहन ने एच.एन.एल. गेट के समक्ष रैली को संबोधित किया।

केन्द्रीय सार्वजनिक उद्यमों का संयुक्त कन्वेंशन

केंद्र सरकार द्वारा सी.पी.एस.यू. के निजीकरण की मुहिम के खिलाफ और उन्हे मजबूत करने के लिए संयुक्त ट्रेड यूनियनों का कन्वेंशन 5 जुलाई को एरनाकुलम में आयोजित किया गया। सीटू के राष्ट्रीय सचिव और राज्य महासचिव एलामरम करीम ने इसका उद्घाटन किया। इससे पहले राज्यव्यापी अभियान एवं आंदोलन बैज पहनकर, गेट मीटिंगें करके, रैलियां निकालकर आयोजित किया गया।

आंध्र प्रदेश में सार्वजनिक क्षेत्र के बचाव में

सार्वजनिक क्षेत्र की रक्षा के मुद्दे पर हस्ताक्षर संग्रह, जीप जत्थों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के साथ एक राज्यव्यापी अभियान षुरू किया गया। तीन अलग–अलग पर्चों की 30,000 प्रतियां वितरित की गईं। विषाखापत्तनम् में 15,000 पुस्तिकाएं वितरित की गयी। विशाखा पोर्ट के निजीकरण के विरोध में 23 सितंबर को एक गोलमेज बैठक हुई; 24 सितंबर को आयोजित एक संगोश्ठी में 250 ट्रेड यूनियन कार्यकर्ता उपस्थित रहे; और 4,000 पुस्तिकाओं और 2,000 पोस्टर के साथ अभियान चलाया। एक सम्मेलन आयोजित किया गया था और हिंदुस्तान जिंक की भूमि की प्रस्तावित बिक्री के विरोध में 2,000 पैम्पलेट वितरित किए गए।

प्रतिरक्षा कर्मियों द्वारा रक्षामंत्री की बैठक का बहिष्कार

तत्कालीन केंद्रीय रक्षा मंत्री अरुण जेटली ने हैदराबाद और मेडक स्थित बीडीएल इकाइयों के 27 अगस्त को अपने दौरे के दौरान, मजदूरों को गुमराह करने की एक भयावह बोली में कहा था कि सरकार वास्तव में सार्वजनिक क्षेत्र की रक्षा प्रतिष्ठानों की रक्षा करने की कोशिश कर रही है, जबकि उनके विनिवेश का प्रस्ताव है। बीडीएल के 25 फीसदी विनिवेश का लक्ष्य रखा गया है। प्रबंधन ने दोपहर में जेटली के साथ कर्मचारियों और मजदूरों की बैठक की व्यवस्था की थी।

मान्यता प्राप्त और सीटू से सम्बद्ध भारत डायनेमिक्स एम्प्लॉइज यूनियन की पहल पर, बी.डी.एल. की सभी यूनियनों, जिनमें इन्टक और बी.एम.एस. दोनों, टी.आर.एस.के.वी. तथा स्वतंत्र बी.डी.ई.ए. शामिल थी, ने केंद्र सरकार के विनिवेश का विरोध करने के लिए एक साझा मंच पर आकर, मजदूरों के बीच संयुक्त अभियान शुरू किया और रक्षा मंत्री के साथ बैठक का बहिष्कार किया। प्रबंधन ने बीडीएल की बनूर इकाई से मजदूरों को लाने के लिए विशेष बसों की व्यवस्था की जो पूरी तरह खाली लौट आयी। डीआरडीओ और हैदराबाद के अन्य रक्षा प्रतिष्ठानों के सभी कर्मचारियों ने भी बैठक का बहिष्कार किया।

मोदी सरकार के मंत्री और विनिवेश नीति को हैदराबाद में प्रतिरक्षा कर्मचारियों से एक बड़ा झटका लगा है।

योजना मजदूर

आई.सी.डी.एस. को समाप्त करने की कोशिश का विरोध करें

10 अक्टूबर को, अपनी राज्य समितियों के माध्यम से, सीटू सचिवमण्डल ने देशव्यापी चेतावनी भेजी है और मोदी सरकार की आई.सी.डी.एस. को खत्म करने के हालिया प्रयास के खिलाफ सभी आई.सी.डी.एस. कर्मचारियों और जनता के व्यापक हिस्सों की विशाल लामबन्दी और कार्रवाई करने का आह्वान् किया है।

सरकार ने वर्तमान राशन घर ले जाने की जगह प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण; और आंगनवाडी केन्द्रों में गर्म पकाये भोजन के स्थान पर डाकघर के माध्यम से पैक किए गए भोजन का वितरण प्रस्तावित किया है। जैसा कि केंद्र द्वारा निर्देशित है, कुछ राज्यों ने नर्सरी–पूर्व स्कूल भी खोले हैं। यह सभी आंगनवाड़ी केंद्रों को निरर्थक बनाने और अंततः आई.सी.डी.एस. को समाप्त करने का कारण बनेंगे, जो 6 साल

से कम के 8 करोड़ बच्चों और खाद्य सुरक्षा कानून के तहत 1.9 करोड़ माँओं के भोजन (पोषण) के अधिकार को ; और 26 लाख आँगनवाड़ी मजदूरों और सहायकों की नौकरी को समाप्त कर देगा।

यह पीडीएस, रसोई गैस आदि में सब्सिडी वापस लेने के बाद का एक और कदम है; कई अन्य योजनाओं और सामाजिक सुरक्षा पर कोड में भी सरकार के प्रस्ताव भी इसी पर लक्षित हैं। यह सब्सिडी को खत्म करने और सभी जन कल्याणकारी योजनाओं और परियोजनाओं में सरकारी व्यय को काफी कम करने की भाजपा सरकार की समग्र योजना का अभिन्न अंग है।

कुछ भाजपानीत राज्य सरकारें सीटू की आँगनवाड़ी यूनियनों को विघटित और कमजोर करने की कोशिशें करने में लगी हैं। आर.एस.एस. नीत सांप्रदायिक ताकतें योजना कर्मियों विषेश रूप से आंगनवाड़ी मजदूरों के बीच अपने प्रभाव को बढ़ाने की कोशिशें कर रही हैं। आई.सी.डी.एस. की कमजोरी, अंततः ट्रेड़ यूनियन आंदोलन, विषेशकर महिलाओं और ग्रामीण मजदूरों के बीच समग्र रूप से कमजोरी हो सकती है, ।

आंगनवाडी कर्मचारियों का सीटू का महासंघ ए.आई.एफ.ए.डब्ल्यू.एच. ने 22 और 23 सितंबर को तत्काल विरोध सहित आंदोलन की शुरुआत की, 2 से 9 अक्टूबर को प्रतिरोध सप्ताह के दौरान विरोध प्रदर्शन, योजनाओं के लाभार्थियों और आम जनता के बीच हस्ताक्षर अभियान आदि चलाऐ गऐ।

सीटू सचिवमण्डल ने आई.सी.डी.एस. को खत्म करने के लिए इस षड्यंत्र के खिलाफ संघर्ष में संपूर्ण सीटू को पूरी तरह से शामिल होने के लिए कहा है; ए.आई.एफ.ए.डब्ल्यू.एच. के कार्यक्रमों का समर्थन और सहायता करने; और अभियान शुरु करने; 9–11 नवम्बर महापड़ाव के अभियान के दौरान भी, आंगनवाडी कर्मचारियों, लाभार्थियों और जनता के अन्य वर्गों के द्वारा जमीनी स्तर पर प्रतिरोध को मजबूत करने के लिए अभियान शुरू किया जाऐ।

वैश्विक पोषण रिपोर्ट, 2016

आई.सी.डी.एस. प्रजनन उम्र की महिलाओं में एनीमिया को रोकने और बच्चों के विकास में कमी के लिए एक महत्वपूर्ण योजना है। ग्लोबल पोषण रिपोर्ट, 2016 के अनुसार निम्नलिखित आंकडे भारत में दोनों की रैंकिंग और प्रसार की स्थिति के बारे में हैं।

- **प्रजनन उम्र की महिलाओं में एनीमिया की व्यापकता; रैंकिंग –170; प्रसार – 48.1%**
- **अविकसितता की व्यापकता; रैंकिंग – 114; प्रसार – 38.7%**

सरकार का भ्रामक वक्तव्य

ऐसा प्रतीत होता है कि ए.आई.एफ.ए.डब्ल्यू.एच. द्वारा देशव्यापी विरोध के दौरान, महिला और बाल विकास मंत्रालय (डब्ल्यू.सी.डी.) ने 12 अक्टूबर 2017 को एक जारी बयान जारी किया, जिसमें आई.सी.डी.एस. के तहत 'अनुपूरक पोषण कार्यक्रम' को बंद करके उसकी जगह 'नकद अंतरण' के सरकार के प्रस्ताव को नकारा गया है।

इस बयान में स्पष्टता की तुलना में प्रश्न अधिक उभरते हैं, 19 सितंबर, 2017 को 130 जिलों के अधिकारियों की बैठक को संबोधित करते हुए महिला एवं बाल विकास मंत्री के व्यापक मीडिया में प्रचारित बयान कि ''आंगनवाड़ी 20 साल पहले एक प्रभावी वितरण प्रणाली बंद कर दी गई''; और पोस्ट ऑफिस के माध्यम से पोशक पैकेजों का सुझाव देते हैं; पर ए.आई.एफ.ए.डब्ल्यू.एच. द्वारा स्पष्टीकरण मांगने पर, डब्ल्यू.सी.डी. सचिव ने सूचित किया कि, ''डी.बी.टी. (प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण) को मंत्रालय में विचार किया जा रहा है और निर्णय शीघ्र ही लिया जाएगा.... पहले चरण में, हम 300 सबसे अधिक पिछड़े जिलों को कवर करेंगे.... इसके बाद एक साल बाद शेष जिलों को कवर किया जाएगा। ''9 मार्च 2017 को मंत्रालय के बयान में भी कहा कि ''.... सरकार एक विकल्प के रूप में एक पायलट के तौर पर चयनित जिलों में घर राशन ले जाने के बजाय सषर्त नकदी स्थानांतरण की संभावना भी तलाभ रही है।'' तदनुसार, मंत्रालय का पत्र एफ. न. 19/10/2016–डब्ल्यू.बी.पी. दिनांकित 5 जनवरी 2017 ने दिल्ली, उत्तराखंड और ओडिशा की सरकारों को आई.एस.एस.एन.आई.पी. के तहत राशन घर ले जाने के स्थान पर सषर्त कैष ट्रांसफर को पायलट प्रोजेक्ट को तुरंत लागू करना शुरू करने के लिए कहा है। मंत्रालय अन्य राज्यों को ऐसे पत्र जारी किए होंगे।

केन्द्र सरकार की परियोजनाओं को बन्द करने की साजिश जनता को मिली सीमित राहतों व सामाजिक सुरक्षा पर बड़ा हमला

जयभगवान

केन्द्र सरकार द्वारा वर्षों से चल रही परियोजनाओं के बारे में हाल में कई प्रतिगामी फैसले आए हैं। इन परियोजनाओं पर आज बड़ा हमला बोला जा रहा है। इन्हें या तो अप्रासंगिक ठहराने के प्रयास हैं या इन्हें लागू करने में हो रही अनियमितताओं का बहाना बनाकर इनके स्वरूप को बदलने के प्रयास हैं। शासन की रणनीति यही है कि किसी भी प्रकार से आम जनता के हिस्सों को उपलब्ध करवाई जा रही मामूली सी राहतों को छीन लिया जाए। पोषण, स्वास्थ्य, प्राथमिक शिक्षा और माताओं एवं बच्चों की देखभाल जैसी बुनियादी सेवाएं प्रदान करने वाली योजनाएं, समेकित बाल विकास परियोजना, मिड डे मील योजना एवं राष्ट्रीय स्वास्थ्य योजना बहुत ही महत्वपूर्ण व बड़ी योजनाएं हैं।

समेकित बाल विकास परियोजना(आईसीडीएस)

1975 में शुरू हुई इस योजना के 6 उद्देश्य रहे हैं। इनमें से प्रमुख है 6 वर्ष से कम आयु वर्ग के बच्चों, दूध पिलाने वाली माताओं व गर्भवती महिलाओं को पोषण व देखभाल। वर्तमान में देश में 6 वर्ष तक के 8 करोड़ बच्चे व 2 करोड़ महिलाएं इस योजना का लाभ ले रहे हैं।आईसीडीएस ने माताओं और बच्चों के कुपोषण को दूर करने और बच्चों के पूर्ण विकास के लिए असरदार ढंग से काम किया है। यह राष्ट्रीय स्वास्थ्य परिवार सर्वेक्षण 3 और 4 के आँकड़ो से साबित होता है।माताओं एवं बाल मृत्यु दर से निपटने में यह योजना बेहद प्रभावी साबित हुई है।मोदी सरकार ने अपने पहले ही बजट में आईसीडीएस के बजट में 55 प्रतिशत कटौती कर योजना को बर्बाद करने की मंशा को साफ कर दिया था।

महिला बाल विकास मंत्री श्रीमती मेनका गाँधी की हाल ही में की गई घोषणा के अनुसार आंगनवाड़ी में 3 से 6 साल के बच्चो को ताजे पकाये हुए भोजन की जगह डिब्बा बन्द खाना डाक खाने के माध्यम से दिया जायेगा। मंत्रालय द्वारा दूसरी खतरनाक घोषणा की गई जिससे 3 वर्ष की आयु तक के 4.6 करोड़ बच्चो के लिए, 1.9 करोड़ गर्भवती तथा बच्चों को दूध पिलाने वाली माताओं को राशन की बजाये सीधा पैसा हस्तांतरण किया जायगा। अभी यह 300 जिलो में होगा। एक साल के अन्दर–अन्दर बाकी जिलो में भी इसे लागू किया जायेगा। हमारे देश में जहाँ ज्यादातर बच्चे कुपोषित कमजोर व कम वजनी है उनको आंगनवाड़ी केन्द्रो में ताजे पकाये हुए खाने की जगह बड़ी कम्पनियों व ठेकेदारो को लगाना या खातो में पैसा हस्तांतरण करना आईसीडीएस के उद्देश्यो के खिलाफ है और सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशो का भी उल्लंघन है। क्या केवल 158 रू प्रति माह में घर में महीना भर यह पोषक भोजन उपलब्ध करवाया जा सकता है! सरकार के नए कदम से न केवल आईसीडीएस की दशको की उपलब्धियाँ ही बेकार जायेंगी बल्कि इस देश में 25 लाख आंगनवाड़ी वर्कर्स और हैल्पर्स के जीवनयापन के साधन भी खत्म होगे। जिस प्रकार से केन्द्र सरकार द्वारा गैस सब्सीडी का पहले खाते में पैसा हस्तांतरण करने की प्रक्रिया शुरू की गई व बाद में अब इसे पूरी तरह खत्म करने की घोषणा कर दी गई, ठीक यही हालत आंगनबाड़ी से लाभार्थी तबकों के साथ होगी।

मिड डे मील परियोजना

1995 से देश के 2508 खंडो से शुरू हुई इस योजना का 1997–98 में देशभर में विस्तार हुआ व 2007 में 8वीं कक्षा तक के बच्चों को इसके दायरे में लाया गया। 2011–2012 में सरकारी व सरकारी सहायता प्राप्त 12 लाख 60 हजार स्कूलों के 11 करोड़ 30 लाख बच्चे इस योजना में दोपहर को स्कूलो में ताजा बना भोजन प्राप्त कर रहे थे। दूनियाभर में यह अनूठी योजना है जिसे पिछली यूपीए सरकार अपनी महत्वाकांक्षी परियोजना के रूप में प्रचारित करती रही थी। योजना का मुख्य उद्देश्य बच्चों को दोपहर को स्कूलो में ही पौष्टिक भोजन उपलब्ध करवाना है। इसके बहाने बच्चों में कुपोषण दूर करने व सरकारी स्कूलों में ड्राप आउट को रोकना व दाखिलों को बढ़ाने के दोहरे लक्ष्य को हासिल करना भी योजना का प्रमुख उद्धेश्य रहा है। देश के अधिकतर हिस्सो में यह योजना काफी सफल रही है। यह इस सबके बावजूद है कि सरकार द्वारा इसके लिए अलग से कोई ढ़ांचा खड़ा नहीं किया गया बल्कि शिक्षा विभाग के मातहत ही इस योजना का कियान्वयन किया गया। 2012 में इस योजना में 27 लाख के करीब वर्कर्स काम कर रही थीं जिन्हें पगार के रूप में केवल 1000 रूपये मासिक मिल रहे थे जो आज भी देश के अधिकतर राज्यो में मिल रहे हैं। वर्कर्स जो 95 प्रतिशत से ज्यादा महिलाएं हैं वह भी समाज के सबसे कमजोर व गरीब तबकों से तथा इनमें भी करीबन 40 प्रतिशत विधवा महिलाए हैं।

मोदी के नेतृत्व में 2014 में बनी एनडीए सरकार ने अपने प्रथम बजट में योजना के आवंटन में 33 प्रतिशत की कटौती कर दी।योजना के लिए जहां 2013–2014 में बजटीय आवंटन 13215 करोड़ था वह 2017–18 में घटकर 10000 करोड़ रह गया। अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ने के चलते केन्द्र से जारी मदद को केवल 60 प्रतिशत तक सीमित कर दिया व 40 प्रतिशत राज्य सरकारों को खर्च करने का फरमान जारी कर दिया गया। इस योजना को भी निजी हाथो में सौंपने व बड़े कारपोरेटों को, मुनाफे लूटने के लिए उपलब्ध करवाने के प्रयास यूपीए द्वितीय सरकार के शासन से रहे हैं। वर्तमान सरकार कहीं आगे बढ़कर इस दिशा में काम कर रही

है। हालांकि यह योजना खाद्य सुरक्षा अधिनियम के दायरे में आती है। परन्तु स्कूलो में पकाया हुआ भोजन उपलब्ध करवाने के विकल्प के तौर पर योजना में केन्द्रीय रसोईघर अर्थात लाखों बच्चों का राशन एक ही स्थान पर तैयार करके स्कूलो में भेजे जाने का प्रावधान

अधिनियम में ही कर दिया गया। हाल ही में 16 मई 2017 को सरकार ने अधिनियम में बदलाव करके मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा गजट नोटिफिकेशन जारी कर यह फरमान दे दिया गया कि न केवल शहरी स्कूलो में बल्कि जहां तक सड़क सुविधा हो ग्रामीण क्षेत्रो में भी केन्द्रीय रसोईघरों/फैक्ट्रियों से खाना तैयार करके स्कूलो में भिजवाया जा सकता है। यह न केवल बच्चों के जीवन से खिलवाड़ है बल्कि वर्कर्स के रोजगार को छीनकर बड़े –बड़े कारपोरेटस एनजीओ को मुनाफे कमाने के लाइसेंस दिये जा रहे हैं। इस्कान , अक्षयपात्रा फांउडेशन, वेदान्ता समूह जैसे बड़े–बड़े भीमकाय एनजीओ राज्यों में ठेके लेने की होड़ में लगे हैं। ये न केवल योजना का पैसा ले रहे हैं बल्कि यह झूठ बोलकर कि देश में गरीब बच्चों को मुफ्त भोजन उपलब्ध करवा रहे हैं देश–विदेश से लाखों डालर चंदे के रूप में ले रहे हैं ।

हरियाणा की भाजपा सरकार द्वारा तो यह योजना शिक्षा विभाग की बजाय पंचायत एवं विकास विभाग को सौंपी जा रही है। देश के किसी भी राज्य में ऐसा नहीं है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य योजना

2006 में राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य योजना के नाम से शुरू की गई इस योजना को अब राष्ट्रीय स्वास्थ्य योजना के नाम से जाना जाता है। बड़े शर्म की बात है कि स्वास्थ्य का बजट जीडीपी का मात्र 0.25 प्रतिशत है और आम बजट का 1 प्रतिशत। नेपाल व भूटान इससे कहीं ज्यादा स्वास्थ्य पर खर्च करते हैं। जनता को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं देने के लिए स्थायी ढ़ाचा खड़ा करने की बजाए यह योजना शुरू की गई, जिसमें डाक्टर से लेकर चौथे दर्जे तक के कर्मचारी शामिल हैं जो योग्यता प्राप्त हैं परन्तु स्थायी नहीं है। गर्भवती महिलाओं की देखभाल व टीकाकरण तथा संस्थागत प्रसूति के लिए आशाओं की भर्ती की गई है जिन्हें समाज सेविका का नाम दिया गया है। योजना ने बेहतर परिणाम दिए हैं विशेषकर संस्थागत प्रसूति में भारी इजाफा हुआ है। 2005 से अब तक जन्म के समय शिशु–मृत्यु दर में 34 प्रतिशत की कमी आई है व मातृ–मृत्यु दर में 36 प्रतिशत की कमी आई है। स्वास्थ्य विभाग का बुनियादी ढांचा बेहद कमजोर है। उसके बावजूद मोदी सरकार ने सता में आते ही योजना के बजट में 20 प्रतिशत की कटौती कर दी जिसके नकारात्मक प्रभाव पड़े हैं।

हमारी आबादी की जरूरतनुसार 30 हजार की आबादी पर एक पीएचसी व 1 लाख की आबादी पर एएक सीएचसी होनी चाहिए। सीएचसी पर एक सर्जन, एक महिला रोग विशेषज्ञ, एक बाल विशेषज्ञ जरूर होना चाहिए। परन्तु हरियाणा में किसी भी सीएचसी पर न तो सर्जन है न ही बाल विशेषज्ञ। केवल 7 सीएचसी पर महिला रोग विशेषज्ञ है। किसी भी सीएचसी पर व अधिकतर सिविल हस्पतालों में अल्ट्रासांउड की मशीन नहीं है। अभी हाल ही में कुछ हस्पतालों में प्राईवेट सेंटरों को ठेके दिए गए हैं। सरकारी हस्पतालों में तमाम तरह के टैस्टों पर शुल्क लगा दिए गए हैं। दाखिल मरीजों से प्रत्येक दिन शुल्क वसूला जा रहा है। मुफ्त दवाई योजना लगभग बंद कर दी गई हैं। अधिकतर दवाईयां व आप्रेशन का सामान बाजार से खरीदना पड़ रहा है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी एनजीओ को घुसाया जा रहा है। यही है वर्तमान सरकार के फैसलों का असर। इसके बावजूद सरकारी हस्पतालों में लोगों की भारी भीड़ है, इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं की जरूरत कितनी ज्यादा है।

योजनाओं की जरूरत

भारत जैसा देश जो मानव विकास के मामले में 188 देशों में 131वें स्थान पर है। यहां 79 प्रतिशत बच्चे व महिलाएं खून की कमी का शिकार हैं। भारत के आधे बच्चे, जो 25 वर्ष से कम आबादी का 50 प्रतिशत हैं, अति दुर्बल व बुरी तरह कुपोषित हैं। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के अनुसार हर साल भारत में जन्म लेने वाले 2.5 करोड़ बच्चो में से 75 लाख बच्चे एक साल के भीतर मृत्यु का शिकार हो जाते हैं।भारत में प्रसव के दौरान मातृमृत्यु दर व शिशु मष्त्यु दर गरीब देशों से भी कहीं ज्यादा है। स्वास्थ्य खर्च की हालात यह है कि परिवारों द्वारा स्वास्थ्य पर खर्च करने के चलते प्रत्येक वर्ष लगभग 5.5 करोड़ लोग गरीबी की रेखा से नीचे चले जाते हैं। एस.ई.सी.सी (सामाजिक–आर्थिक जातीय जनगणना–2011) की रिपोर्ट बताती है कि 75 प्रतिशत ग्रामीण आबादी की आमदनी 5000 रूपये महीना से भी कम है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि स्वास्थ्य, पोषण, महिलाओं व बच्चों की देखभाल से संबंधित ये योजनाएं कितनी जरूरी है।

कारपोरेटस हितों से संचालित भाजपा सरकार

तमाम संसदीय समितियों, कैग की रिपोर्ट, योजना आयोग की रिर्पोटो में इन बडी योजनाओं में बुनियादी सुधार करने और अधिक बजट आवंटन करने की सिफारिशें की गई हैं। सरकार ने पहले ही फंड के पैटर्न बदल दिए हैं। धन की कमी का बहाना बनाकर उसने वेदान्ता जैसे कारपोरेट घरानों को शामिल करने समेत निजीकरण के तमाम कदम उठाए हैं। योजनाओं की बुनियादी अवधारणा के विरूद्ध, सरकार आई.सी.डी.एस. एवं मिड डे मील स्कीम में इस्कान, अक्षयपात्रा, नंदी फांउडेशन जैसे कारपोरेट एनजीओ को रसोई खोलने व ब्रिटानिया, नेस्ले, पेप्सिको, पतंजलि आदि कारपोरेट खाद्य दिग्गजों को शामिल करने की कोशिश कर रही है। योजनाओं को अनिवार्य रूप से आधार से जोड़ने का एक और कदम है जो गरीबों को उपलब्ध लाभों को कम करने की कोशिश है।

सरकार एक तरफ कल्याणकारी कार्यक्रमों के लिए धन की कमी की बात कर रही है दूसरी तरफ पिछले तीन साल में कारपोरेट घरानों को 12 लाख करोड़ रूपये के करीब की कर माफी दे चुकी है। 2017–18 में इन तीन योजनाओं का कुल बजट 50000 करोड़ रूपये रखा गया है जबकि इसी बजट में कंपनियों को 83000 करोड़ की छूट दी गई है। मनरेगा जैसी योजना जिससे करोड़ों परिवारों को रोजगार मिलता, का बजट 48000 करोड़ रूपये है, जिसमें पिछले वर्ष की 11000 करोड़ की मजदूरी की देनदारियां भी हैं। वहीं बुलेट ट्रेन के लिए 1 लाख 10000 करोड़ रूपये हैं, जिसमें कभी आम आदमी सफर नहीं कर पाएगा। इन्हीं नीतियों के चलते देश के 1 प्रतिशत अमीर, देश की 58 प्रतिशत सपंत्ति के मालिक हैं। 57 अरबपतियों की धन–दौलत 70 प्रतिशत आबादी की दौलत से कहीं ज्यादा है। यही है शासन की नीतियों की तस्वीर।

आन्दोलन ही एकमात्र रास्ता

ऐसे हालात में आज विकल्प यही है कि जनता को मिली हुई इन राहतों पर किये जा रहे हमलों के खिलाफ संयुक्त व योजनाबद्ध ढ़ंग से संघर्ष खड़ा किया जाए। यह केवल इन योजनाओं में कार्यरत 60 लाख वर्कर्स जिनमें समाज के गरीब व कमजोर तबकों की महिलाओं के रोजगार को बचाने व सुविधाएं हासिल करने का ही मामला नहीं है बल्कि जनता के व्यापक हिस्सों को मिल रही थोड़ी–बहुत राहतों को बचाने का भी बड़ा मामला है। इसलिए सभी परियोजनाकर्मियों सहित मजदूरों, किसानों, महिलाओं, कर्मचारियों , अध्यापकों को इन योजनाओं की बचाने व इन्हें समष्द्ध करने के संघर्ष में शामिल होना पड़ेगा। तभी नीतियों के रूख को मोड़ा जा सकता है।

राज्यों से

आंगनवाड़ी कर्मियों पर बर्बर हमला

पंजाब

पंजाब में सीटू की आंगनवाड़ी यूनियन, आंगनवाड़ी मुलाजम यूनियन के आहवान पर पंजाब में काँग्रेसनीत सरकार के स्कुलों में प्री–प्राइमरी कक्षा शुरू करने के कदम को वापस लिउ जाने तथा केन्द्र की भाजपा सरकार की आंगनवाड़ी केन्द्रों को बंद करने की साजिश के तहत नकदं पैसा हस्तांतरण के खिलाफ पटियाला में शान्तिपूर्ण अनिश्चिजकालीन राज्य स्तरीय महापड़ाव में बैठी 10000 आंगनवाड़ी कर्मियों पर 23–24 अक्टूबर की दरमियानी रात को पुलिस ने बर्बर हमला करते हुए लाठी चार्ज किया। पुलिस हमले में सीटू की राष्ट्रीय सचिव व आईफा की अध्यक्ष ऊषा रानी समेत कई कर्मी घायल हुई तथा पुलिस द्वारा गिरफ्तार की गयीं।

आईफा ने पंजाब सरकार के इस कायरतापूर्व कदम की कड़ी भर्त्सना करते हुए गिरफ्तार नेताओं को तुरन्त रिहा करने व परियोजना विरोधी कदमों को वापस लेने की माँग की है।

पटियाला में महापड़ाव

झारखंड

बोनस की माँग पर मजदूरों की शानदार जीत

एक और जहाँ झारखंड में भाजपा सरकार के शासन में कारखाना मालिकों का मनोवल बहुत बढ़ गया है और मजदूरों के अधिकारों में कटौती और मजदूरों का शोषण काफी बढ़ गया है वहीं सी. आई. टी. यू. के नेतृत्व में मजदूर संधर्ष करते हुए आदित्यपुर औद्योगिक क्षेत्र के मजदूर अपने अधिकारों की रक्षा कर रहे हैं और कारखाना मालिकों के मनमानी पर बहुत हद तक अंकुश लगाने में सफल रहे हैं। इस बार मालिकों ने निर्णय लिया था कि 8.33 प्रतिशत से अधिक बोनस मजदूरों को नहीं दिया जाएगा। इन्डस्ट्रीयल मजदूर यूनियन, जमशेदपुर (सीटू) के नेतृत्व में मजदूरों ने अपनी एकता और संधर्ष के द्वारा जीत हासिल की है तथा 16 प्रतिशत से 20 प्रतिशत तक बोनस देने पर मालिकों को मजबूर किया है। सीटू की यूनियन के द्वारा किये गये बोनस समझौते के अनुसार यूनाटेड ईजिटेक प्रा० लि०, हाई–टेक केमिकल्स, सुरज ऑटोमोवाईल, एस्ट्रो ईजिनियर्स, एम० बी० इन्टरप्राइसेस, बाबा ईंजिनियर्स में 20 प्रतिशत, प्रभात फेब्रीकेटर्स में 19 प्रतिशत, खुराना इन्डस्ट्री, आरूष मेटल कास्टींग में 18 प्रतिशत, डी० डी० ट्रांसपोर्ट में 17 प्रतिशत, इन्डियन फौर्जिग व टाटानगर कोल्ड स्टोरेज में 16 प्रतिशत बोनस दिया जायेगा। *(योगदानः विनय कोत लाल दास)*

राज्यों से

मध्यप्रदेश

आंगनवाड़ी कर्मियों की सफल 3 दिवसीय हड़ताल

लगभग 40,000 आंगनवाड़ी कर्मी प्रदेश के अधिकतर जिलों में विशेषकर जबलपुर, ग्वालियर, रीवा, भोपाल, मांडला, सिवनी, अनूपपुर, शहडोल, होशंगाबाद, गुना, कटनी, बेतूल, मुरैना, बालाघाट, सीधी व इंदौर में 9 से 11 अक्टूबर 3 दिनों तक तथा राज्य के कुल 51 में से शेष 38 जिलों में 3 से 2 दिन तक लगातार हड़ताल पर रहे। अधिकतर आंगनवाड़ी केन्द्र बंद रहे और सभी तीनों दिन जिले व तहसील मुख्यालयों रैलियां निकाली गयीं, प्रदर्शन किये गये तथा जिला प्रशासन के माध्यम से मुख्यमंत्री, महिला व बाल विकास मंत्री तथा मुख्य सचिव को ज्ञापन दिये गये। कई जिलों में आंगनवाड़ी कर्मियों ने दिन–रात लगातार धरना दिया।

यह हड़ताल आंगनवाड़ी कर्मियों व सहायिकाओं लिए न्यूनतम वेतन सलाहकार बोर्ड की सिफारिशों पर तुरन्त अधिसूचना तथा अन्य मांगों को लेकर सीटू की आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका एकता यूनियन के तीन दिन की हड़ताल के आहवान पर की गयी थी। मुख्यतः सीटू की पहलकदमी व सीटू तथा उसकी आंगनवाड़ी यूनियन द्वारा के चलते न्यूनतम वेतन सलाहकार बोर्ड ने 22 जनवरी, 2016 की अपनी बैठक में सर्वसम्मति से आंगनवाड़ी 'मजदूरों' को 'अर्धकुशल' मजदूर की तथा सहायिकाओं को 'अकुशल' मजदूर की श्रेणी में डालने तथा उसी के अनुरूप उनके लिए राज्य के न्यूनतम वेतन को अधिसूचित करने की सिफारिश की थी। तथापि, सरकार पिछले 21 महीनों से आंगनवाड़ी वर्करों की सिफारिशों को दबाकर बैठी हुई है

हड़ताल की अन्य मांगों में सरकारी कर्मचारियों की मान्यता, 18000 रूपये न्यूनतम वेतन, कम से कम 3000 रूपये पेंशन, वर्करों के लिए पदोन्नत होकर सुपरवाइजर बनने तथा सहायकों का वर्कर बनने के अवसर, मिनी केन्द्रों को मजबूत करने, बिना वेतन के आंगनवाड़ी दीदीयों की भर्ती को बंद करने आदि जैसी राष्ट्रीय मांगे शामिल थीं।

सीटू राज्य नेताओं ने प्रदेश में आंगनवाड़ी कर्मियों की हड़ताल को सफल बनाने के लिए तैयारियों, लामबंदी व प्रदर्शन आदि कार्यक्रमों को लागू कराने के लिए इलाकवम् , क्षेत्रवार जिम्मेदारियों सेभाली थीं।

अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह

समान वेतन के लिए दिहाड़ी मजदूरों की पूर्ण हड़ताल

अंडमान सार्वजनिक निमार्ण विभाग मजदूर संध (सीटू) के बैनर तले; अंडमान पब्लिक वर्क्स डिर्पाटमेंट (ए पी डब्लू डी) के सभी 4000 दिहाड़ी मजदूर, बेसिक के 1/30 तथा महंगाई भत्ता दिये जाने के सरकारी आदेश को अधिसूचित किये जाने की मांग को लेकर 10 अगस्त को अंडमान व निकोबार द्वीप समूह के समूचे केन्द्र शाषित प्रदेश में पूर्ण हड़ताल पर रहे। पोर्टब्लेयर व दक्षिण अंडमान के ग्रामीण इलाकों के हड़ताली मजदूरों ने राजधानी पोर्टब्लेयर में मुख्य अभियंता के कार्यालय पर धरना–प्रदर्शन किया जिसे यूनियन के अध्यक्ष बी. चन्द्रचूडन व महासचिव एम भूमिनाथन ने संबोधित किया। हड़ताली मजदूरों ने डिगलीपुर, मायाबंदर, रंगत, कदमतला, नील आइलैंड, हेवलॉक, लिटिल अंडमान, कार–निकोबार, कमोरटा, कटचल व कैंपबेल–बे में भी संबंधित कार्यपालक इंजीनियरों के कार्यलयों के बाहर–धरने–प्रदेर्शन किये।

अंततः 30 सितम्बर को अंडमान निकोबार प्रशासन, पी डब्लू डी, जंगलात व अन्य विभागों के दिहाड़ी मजदूरों को भारत सरकार के प्रासंगिक स्केल के आधार पर वेतन का 1/30 तथा महंगाई भत्ता देने पर सहमत हुआ।

केरल

आंदोलन व गतिविधियां

स्कूल हैल्थ नर्सों के मुद्दों पर : राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की 600 स्कूल हैल्थ नर्सो ने अपने रोजगार व वेतन को नियमित किये जाने की माँग करते हुए डी एच एस ऑफिस के सामने घरना दिया। धरने का उद्धाटन सीटू राज्य अध्यक्ष अनंथलावत्तम आनंदन ने किया।

मछूआरों के मुद्दों पर : केन्द्र सरकार की मतस्य नीतियों के विरोध में फिश वर्कर्स फेडरेशन ने 3 जुलाई को राजभवन मार्च किया। मार्च का उद्धाटन सीटू राज्य महासचिव इलामारम करीम ने किया।

अंतस्थलीय मछली पकड़ने से जुड़ी समस्याओं पर 8 जुलाई को वैक्कम में हुए उक सेमिनार में जाने – माने वैज्ञानिकों व 465 मजदूरों ने भाग लिया।

मछुआरों की मांगों को उठाते हुए 10 केन्द्रों पर मार्च व धरने किये गये। 10 जिलों में मछुआरों के विशेष कन्वेंशन किये गये तथा आंदोलन की सफलता के लिए आयोजित समितियां गठित की गयीं।

एफ सी आइ मजदूरों के मुद्दों पर : एफ सी आई के तिरूअनंतपुरम स्थित क्षेत्रीय कार्यालय पर 4 जुलाई को समान काम, समान वेतन, एफ सी आई गोदामों में निजीकरण को समाप्त करने, राशन प्रणाली को मजबूत करने की मांगों के लेकर एक संयुक्त ट्रेड यूनियन मार्च व पिकेटिंग की गयी। सीटू राज्य सचिव वी शिन कुट्टी ने उद्धाटन किया।

आंगनवाड़ी कर्मियों के मुद्दों पर : आंगनवाड़ी कर्मियों द्वारा राज्य में 10 जुलाई को अधिकार दिवस के रूप में मनाया। 15,752 कर्मियों ने सारे भारत में 18000 रूपये न्यूनतम वेतन, ई एस आई, पी एफ, बार–बार के की काम का पुनर्निरीक्षण आदि मांगों को लेकर जिलों में हुए मार्चों व रैलियों में भाग लिया। थिरूवनंतपुरम राज्य सचिवालय के सामने मार्च व धरना किया गया।

मिड–डे–मील वर्कर्स के मुद्दों पर : राज्य के मिड–डे–मील वर्कर्स फेडरेशन ने, सुविधाओं के साथ मजदूर की मान्यता दिये जाने की राष्ट्रीय माँग उठाते हुए 22 जुलाई को सचिवालय मार्च किया जिसमें 1100 से ज्यादा वर्कर शामिल हुए। सीटू राज्य सचिव कट्टाकदा शशि ने उद्धाटन किया।

फेरीवालों में मुद्दों पर : सुरक्षा के लिए व गैर कानूनी बेदखली को रोकने की माँग करते हुए 1300 फेरीवालों ने 27 जुलाई को राज्य सचिवालय के सामने 1 दिन की भूखहड़ताल की। कार्यक्रम का उद्धाटन वी. शिवनकुट्टी ने किया।

वी के टी एफ राज्य कमेटी ऑफिस पर आर एस एस गुंडों के हमले के खिलाफ 1000 फेरीवालों ने 12 जिलों में विरोध मार्चो में भाग लिया।

27 सितम्बर से 17 अक्टूबर के बीच कल्याण बोर्ड को लागू करने की माँग को लेकर एक स्तरीय वाहन जत्था तथा 17 अक्टूबर को सचिवालय मार्च भी तय किया गया।

कयर मजदूरों के मुद्दों पर : कयर मजदूरों को पी डी एस की प्राथमिकता सूची में शामिल करने की माँग को लेकर 31 जुलाई को लगभग 8000 कयर मजदूरों ने अटिंगल, कोल्लम, करूनागपल्ली अलापुझा, चरेथला, वायकॉम, हरिप्पद, उत्तरी परावूर, कोझिकोड, कोपिलांडी व कन्नूर में सिविल सप्लाई आफिसों के सामने धरने व मार्चो में भाग लिया।

के एस ई बी मजदूरों के मुद्दों पर : ऑन लाइन ट्रांसफर, पदों में कमी तथा प्रोन्नति का अवसर न दिये जाने के बिजली बोर्ड के फैसले के खिलाफ लगभग 300 के एस ई बी मजदूरों ने 11 अगस्त को इलैक्ट्रिसिटी भवन पर धरना दिया।

वॉटर अथारिटी कर्मचारियों के मुद्दों पर : लगभग 1000 कर्मचारियों ने वॉटर अथारिटी एम्पलाई यूनियन के बैनर तले जन हितैषी जल नीति को मजबूत करने, सभी सब–डिवीजनों में मैकेनिकल सुपरिंटेंडेंट नियुक्त करने, आऊटसोर्सिंग समाप्त करने तथा टेक्नीकल स्पेशल रूल आदि लागू करने को लेकर 3 अगस्त को सभी जिला केन्द्रों पर धरनों में भाग लिया।

कामकाजी महिलाओं पर कार्यशाला

गुणवतापरक काम व वेतन; वेतन व प्रोभाति में जेंडर भेदभाव समाप्त करने; सुरक्षित व सम्मानजनक कार्यस्थल; रात्रिपाली में सुरक्षा, अलग शौचालयों की सुविधा; सही व उचित किराये पर आवास; सुरक्षित यात्रा सुविधा, मूल्य वृद्धि पर नियन्त्रण आदि मांगों पर अभियान व आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए केरल की कामकाजी महिलाओं की एक कार्यशाला 29 जुलाई को बी टी आर भवन थिरूनंतपुरम में की गयी। सीटू, एडवा, कंफडरेशन ऑफ सेंट्रल गवर्नमेंट एम्पलाइज, एफ एस ई टी ओ, ए आइ आइ ई ए, बेफी, के एम एस आर ए, बी एस एन एल ई यू से 350 नेताओं व कार्यकर्ताओं ने कार्यशाला में भाग लिया। सीटू की राष्ट्रीय अध्यक्ष के हेमलता ने कार्यशाला का उद्धाटन किया तथा पी नंद कुमार, वी शिवनकुट्टी, एडवा राज्य अध्यक्ष पी सतीदेवी ने संबोधित किया।

मजदूर– किसान एकता

हरियाणा में हुई ऐतिहासिक 'किसान-मजदूर' रैली

हरियाणा के हिसार शहर में 3 अक्टूबर, 2017 को अखिल भारतीय किसान सभा (ए आइ के एस) के 34 वें राष्ट्रीय सम्मेलन की शुरूआत के मौके पर हुई रैली व आम सभा ऐतिहासिक थी। केन्द्र व राज्य की भाजपा सरकारों के द्वारा किये जा रहे गंभीर हमलों की पृष्ठभूमि में किसानों के अधिकारों व जीविका का बचाने के संधर्ष में मजदूरों व किसानों की एकता के महत्व की प्रांसगिकता को सामने रखते हुए इसे 'किसान–मजदूर रैली' का नाम दिया गया था। राज्य भर से लगभग बराबर व हजारों की संख्या में रैली में पहुँचे व कंधे से कंधा मिलाकर चले किसानों व मजदूरों ने किसानों– मजदूरों की मांगों को पुरजोर ढंग से उठाया। त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक सरकार ने मुख्य वक्ता के रूप में रैली व आम सभा को संबोधित किया। सीटू की राष्ट्रीय अध्यक्ष हेमलता ने भी रैली को संबोधित किया।

सीटू की हरियाणा राज्य समिति ने अपनी जून बैठक में किसान सभा के राष्ट्रीय सम्मेलन की तैयारियों में सक्रिय रूप से भागेदारी करने का फैसला किया था। जब रैली को एक संयुक्त किसाान– मजदूर रैली करने का प्रस्ताव आया तो सीटू राज्य समिति ने अपनी अगुणी कार्यकर्ताओं को लेकर राज्य स्तर पर एक आम सभा आयोजित की जिसमें सीटू की राज्य व जिला समितियों की राज्य स्तरीय यूनियनों के 181 सदस्य शामिल हुए। इस बैठक ने मजदूर–किसान एकता के बारे में सीटू के 15 वें सम्मेलन के प्रस्ताव को ध्यान में रखने हुए तथा राज्य व देश में जनवादी आंदोलन को आगे बढ़ाने में किसान सभा के सम्मेलन के महत्व को दर्ज करते हुए, राज्य के मजदूरों से किसान सभा के सम्मेलन को सफल बनाने के लिए एकजुटता व समर्थन व्यक्त करने तथा रैली में शामिल होकर उसे ऐतिहासिक बनाने का आहवान किया। सीटू कार्यकर्ता राज्य व जिलों में स्वागत समितियों का हिस्सा बने तथा किसानों व मजदूरों के बीच चलाये गये संयुक्त अभियान में वे शामिल रहे। इसने, जमीनी स्तर पर एकता बनाने, आपसी विश्वास पैदा करने तथा जनता के विभिन्न तबकों से सममेलन के लिए सामग्री जुटाने में मदद की। कई जगहों से किसानों व मजदूरों ने रैली में शामिल होने के लिए उक साथ प्रस्थान किया।

यह जिक्र करना आवश्यक है कि अगस्त महीने के अंतिम दो सप्ताह में राम रहीम डेरा घटनाक्रम के चलते राज्य में अशांति की स्थिति रही थी; अधिकतर जिलों में कर्फ्यू लगा था। यह फसल कटाई का भी सबसे व्यस्त समय था। इन सभी अवराधों के बावजूद रैली व सम्मेलन को भारी सफलता मिली।

किसानों–मजदूरों की एकता का यह अनुभव, राज्य में आने वाले समय में जनता के जुझारू संधर्षों को खड़ा करने में बहुत ही मददगार साबित होगा।

– जय भगवान

अमित शाह के बेटे के व्यापार पर पत्रकारों की राय

वेबसाइट 'द वायर' के खिलाफ भाजपा अध्यक्ष अमित शाह के बेटे जय शाह द्वारा दायर मानहानि के मुकदमे की पृष्ठभूमि में, दिल्ली यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट्स ने नेशनल अलायंस ऑफ द् जर्नलिस्ट्स के साथ मिलकर 15 अक्टूबर को नई दिल्ली में एक सेमिनार का आयोजन किया। जिसमें पत्रकारों व समाचार एजेंसियों को निशाना बनाते हुए उन पर मानहानि के वाद दायर करने की निंदा की गयी। सेमिनार में पेश प्रस्ताव में कहा गया कि सत्ता में बैठे लोगों को बचाने के लिउ मानहानि के मुकदतों व अभियोजनों का इस्तेमाल अलोकतांत्रिक है, विशेषतौर पर तब जब मीडिया के खिलाफ अनका प्रयोग न केवल डराने के लिए बल्कि जनता को सूचना पाने से रोकने के लिए किया जाता है।

प्रस्ताव ने यह जानने की मांग की, कि द् वायर की रिनोर्ट का कौम सा कथन गलते है। प्रस्ताव में दर्ज किया गया कि, ''यदि ताकतवर राजनेताओं के नजदीकी संबधियों के मामलों संबंधी सूचना को मीडिया द्वारा रोका जाता है, तो इसका एकमात्र परिणाम सत्ता की गुप्तता के रूप में होगा जिससे हर प्रकार का भ्रष्टाचार फैलेगा। यदि सच्चाई को जनता के सामने लाने के स्थान पर सार्वजनिक व्यक्तियों व उनके नजदीकी संबंधियों के मामलों को मानहानि के दावों व् अभियोजनों के माध्यम से छिपाने के लिए राज्य सत्ता का प्रयोग किया जाता है तो यह न केवल प्रेस पर एक हमला है, बल्कि यह संविधानिक जनतंत्र पर एक सीधा हमला है।

अंतर्राष्ट्रीय

डब्ल्यू एफ टी यू - टी यू आइ' की कोलकाता बैठक

वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियंस (डब्ल्यू एफ टी यू) की ट्रेड यूनियन इंटरनेशनल्स (टी यू आई) की वार्षिक परामर्श बैठक 9–10 अक्टूबर, 2017 तक कोलकाता में हुई। एथेंस स्थित डब्ल्यू एफ टी यू के मुख्यालय में होने वाली वार्षिक बैठकों में यह पहली बैठक थी जो कहीं बाहर आयोजित की गयी। वुफ्टू महासचिव जार्ज मावरिकॉस, वुफ्टू के उपमहासचिव तथा टी यू आई के इंटरनेशनल जनरल कोर्डिनेटर व सीटू के राष्ट्रीय सचिव स्वदेश देवरॉय, वुफ्टू के उपमहासचिव तथा इसके एशिया–प्रशान्त क्षेत्र के इंचार्ज एच महादेवन इस बैठक में उपस्थित थे। दुनिया भर से कुल 10 ट्रेड यूनियन इंटरनेशनल्स में से 9 के नेतागण बैठक में शामिल हुए। वुफ्टू से संबद्ध भारत की केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों के नेताओं ने भी इस बैठक में शामिल होकर प्रतिनिधियों को शुभकामनायें दीं।

सीटू की अध्यक्ष हेमलता ने उपस्थितों का स्वागत किया। जार्ज मावरिकॉस ने बैठक का बीज भाषण दिया। स्वदेव देवरॉय ने बैठक की पृष्ठभूमि के बारे में परचा पेश करते हुए वैश्विक स्तर पर वर्गोन्मुख ट्रेड यूनियन ओदोलन को मजबूत करने में टी यू इंटरनेशनल्स की भूमिका तथा विभिन्न टी यू इंटरनेशनल्स से संबद्ध अलग–अलग राष्ट्रीय ट्रेड यमनियनों के बीच बेहतर कार्यप्रणाली व समन्वय विकसित करने की जस्रत के बारे में बताया। महादेवन ने हस्तक्षेप करते हुए वुफ्टू के संविधान के आलोक में टी यू इंटरनेशल्स की कार्यप्रणाली के बारे में समझाया।

इसके बाद हुई चर्चा में 48 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। वुफ्टू महासचिव तथा टी यू इंटरनेशनल्स के द्वारा उनके भाषणों में की गयीं स्थापनाओं का समर्थन करते हुए उन्होंने इन क्षेत्रों के मजदूरों के हालात के बारे में बताया। उन्होंने दो दिवसीय बैठक के आयोजन की सीटू की पहल का स्वागत किया जिसने मुद्दों पर विस्तृत चर्चा को संभव बनाया।

मॉवरिकास ने चर्चा का निष्कर्ष पेश किया तथा साम्राज्यवाद व पूंजीवाद की बर्बर प्रकृति का पर्दाफाश करने के साथ ही मजदूरों के विचार धरात्मक विकास की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने प्रवासियों को संगठित करने की जरूरत तथा शरणार्थियों के मुद्दों को संबोधित करने की आवश्यकता को दोहराया।

बैठक ने सर्वसम्मति से, देवरॉय द्वारा पेश 'कोलकाता (इंडिया) निष्कर्ष' को पारित किया, जिसमें अगले वर्ष हाथ में लिये जाने वाले कार्यो का उल्लेख किया गया।

बैठक की मेजबानी संयुक्त रूप से टी यू इंटरनेशनल्स की घटक भारत की विभिन्न फेडरेशनों–ऑल इंडिया कोल वर्कर्स फेडरेशन, ऑल इंडिया रोड ट्रांसपोर्ट वर्कर्स फेडरेशन, वॉटर ट्रांसपोर्ट वर्कर्स फेडरेशन ऑफ इंडिया, स्टील वर्कर्स फेडरेशन ऑफ इंडिया, कंस्ट्रक्शन वर्कर्स फेडरेशन ऑफ इंडिया, इलैक्ट्रीसटी एम्पलाईज फेडरेशन ऑफ इंडिया, पेट्रोलियम व गैस वर्कर्स फेडरेशन ऑफ इंडिया, ऑल इंडिया इंश्योरेन्स एसोशिएशन, बैंक एम्पलाईज फेडरेशन ऑफ इंडिया, कंफेडरेशन ऑफ सैंट्रल गवर्नमेंट एम्पलाईज एंड वर्कर्स, ऑल इंडिया स्टेट गवर्नमेंट एम्पलाईज फेडरेशन तथा बी एस एन एल एम्पलाईज यूनियन ने की।

10 अक्टूबर को यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट सभागार में हुई सभा में अच्छी संख्या में ट्रेड यूनियन कार्यकर्ता शामिल हुए। इस सभा को जार्ज मॉवरिकास व सीटू महासचिव तपन सेन ने संबोधित किया। स्वदेश देवरॉय ने इस सभा की अध्यक्षता की तथा बेफी के महासचिव प्रदीप बिस्वास ने धन्यवाद किया।

कोलकाता (इंडिया) निष्कर्ष

डब्ल्यू एफ टी यू– टी यू इंटरनेशनल्स की यह वार्षिक परामर्श बैठक, डरबन, दक्षिण अफ्रीका में हुई वुफ्टू की 17 वीं कॉग्रेस के लगभग एक वर्ष बाद और हवाना, क्यूबा में हुई वुफ्टू की अध्यक्षीय परिषद की बैठक के लगभग 5 महीने बाद हो रही है। यह बैठक ऐसे समय हो रही है जब पूंजीवाद का व्यवस्थाजन्य संकट गहरा रहा है तथा पूंजीपति वर्ग संकट के बोझ को मजदूर वर्ग व मेहनतकशों के अन्य तबकों पर डाल कर अपने मुनाफों को बचाने व बढ़ाने की लगातार कोशिश कर रहा है। मजदूर वर्ग द्वारा कड़े संघर्षो के बल पर जीते गये सभी अधिकार व लाभ हमले की चपेट में है।

इस हमले का मुकाबला राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही स्तरों पर करना होगा। इस लड़ाई का नेतृत्व करने की टी यू इंटरनेशनलों पर एक बड़ी जिम्मेदारी है। उन्हें वुफ्टू के दिशानिर्देशों व मदद के अंतर्गत समूची दुनिया में अपने–अपने क्षेत्रों में सैक्टरों के तथा समन्वित आंदोलन को विकसित व मजबूत करना होगा।

डब्ल्यू एफ टी यू की विचारघारा को, विश्व की परिस्थिति के बारे में तथा वर्गीय रूप से उन्मुख ट्रेड यूनियनों की भूमिका के बारे में वुफ्टू की 17 वीं कॉग्रेस की समझदारी को हमारे संबंधित सैक्टरों के मजदूरों के बीच जमीनी स्तर तक ले जाना होगा।

ट्रेड यूनियन इंटरनेशनल्स, वर्गोन्मुख ट्रेड यूनियन आंदोलन के प्रमुख निकय हैं उनकी अपने अलग–अलग सैक्टरों ट्रेड यूनियन अधिकारों, कार्य स्थल को डब्ल्यू एफ टी यू ये जोड़ने समेत मजदूरों के अधिकारों का बचाव करने की बुनियादी जिम्मेदारी है।

'खुली व जनवादी कार्यप्रणाली' का वुफ्टू द्वारा प्रतिपादित व आगे बढ़ाया गया बुनियादी सिद्धांत हमारी सभी ट्रेड यूनियन इंटरनेशनलों की कार्यप्रणाली में झलकना चाहिए। इसलिए, टी यू इंटरनेशनल्स की कार्यप्रणाली में आज जो भी कमियां मौजूद हैं, उन्हें जल्द से जल्द दूर करना होगा।

यह सुनिश्चित करने के लिय हमें निम्नलिखित कार्यभार को स्वीकार करना होगाः

- **सभी ट्रेड यूनियन इंटरनेशनल्स को विश्व स्तर पर विभिन्न देशों में संबंधित उद्योगों में घटना विकास, मजडूरों की दशा तथा उनके संधर्षों पर चर्चा के लिए नियमित रूप से मिलना चाहिए। सारी दुनिया में संबद्ध यूनियनों के बीच सूचना के नियमित आदान–प्रदान के लिए–प्रभावी तरीका को विकसित व लागू किया जाना चाहिए।**
- **दुनिया भर में संबंधित उद्योगों में मजदूरों के संघर्षो का समर्थन किया जाये, एकजूटता कार्यक्रमों की योजना बनाकरी उन्हें लागू किया जाये; व्यापक समर्थन व एकजुटता के लिए इन संघर्षो के बारे में वुफ्टू सचिवालय को सूचित किया जाये।**
- **ऐसी गतिविधियों की योजना बने जो संबंधित सैक्टरों के मजदूरों के विचारधारात्मक विकास में मदद करे।**
- **सभी बैठकों में लिए गये फैसलों के क्रियान्वयन व प्रगति की समीक्षा हो और तदनुसार गतिविधिया तय हों।**
- **ट्रेड यूनियन इंटरनेशनल्स की संबद्ध यूनियनों के बीच तथा टीयू आई व वुफ्टू के बीच, पूंजीपतियों के वैश्विक हमले का प्रभवी प्रतिरोध करने के लिए समन्वय को मजबूत किया जाये।**
- **पूंजीवादी व्यवस्था की निहित शोषणकारी प्रवृत्ति के बारे में जागरूकता फैलाने तथा वयवस्था को बदलने की जरूरत तथा शोषण को समाप्त करने में मजदूर वर्ग की भूमिका के बारे में मजदूरों की चेतना को बढ़ाने के लिए 'दास कैपिटल' के प्रकाशित होने की 150 वीं सालगिरह को मनाया जाना चाहिए।**
- **टी यू इंटरनेशनल्स के संबद्धों को मजदूरों की रोजमर्रा समस्याओं को उठाना होगा, समस्याओं के कारणों का मजदूरवर्ग की दृष्टि से विश्लेषण करना होगा तथा मजदूरों की मांगों को पूरा करने के लिए संघर्षो को छेड़ना होगा।**
- **टी यू आई' को किसानों, छात्रों तथा स्वरोजगार शुदा लोगों के साथ एकता बनाने के लिए काम करना होगा।**
- **टी यू आई' के पास अन्य सैक्टरों व देशो के मजदूरों के साथ अतंर्राष्ट्रीय एकजुटता को बढ़ाने के लिए काम करने की जिम्मेदारी है।**
- **टी यू आई' को, राजनीतिक शरणार्थियों व आर्थिक प्रवासियों द्वारा अमानवीय अत्याचारों का सामना करने की गंभीर समस्या को अतंर्राष्ट्रीय पैमाने पर संबोधित करना होगा जो साम्राज्यवाद की बर्बरता तथा पूंजीवाद संकट से सीधे जुड़ी हैं।**
- **टी यू आई' को, दैत्याकार बहुराष्ट्रीय कार्पोरेशनों (एम एन सी) द्वारा बरपा पूंजीवादी बर्बरता के विरूद्ध ताकतवर उत्तोलक के रूप में काम करना होगा।**
- **टी यू आई' के कार्यो व गतिविधियों के विस्तार के लिए, टी यू आई के फंड की स्थिति पर विशेष ध्यान देकर उनकी कार्यप्रणाली की स्थिति को बेहतर करने के सटीक प्रयास हों।**
- **अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कैडर व जनता को शिक्षित करने के दृष्टिकोण से तथ्यों व आंकड़ों के साथ उद्योगों के हालातों व घटना विकास का नियमित पता लगाया जाये तथा इसकी रिपोर्टे वुफ्टू सचिवालय को भेजी जायें।**
- **एक दूसरे की मदद करने तथा सामूहिक कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के लिए हर क्षेत्र में क्षेत्रीय कार्यालयों व टी यू आई' के बीच सम्मन्वय स्थापित किया जाये।**
- **टी यू आई' को अवश्य ही जमीनी स्तर पर मजदूरों व यूनियनों के बीच लगातार वुफ्टू को बढ़ावा देना चाहिये तथा उन्हें वुफ्टू परिवार में शामिल करना चाहिये। सभी टी यू आई' की संगठनात्मक सफलता का आंकने को यह एक अहम पैमाना होना चाहिये।**
- **टी यू आई' को वुफ्टू के विभिन्न मंचों की गतिविधियों में अवश्य ही भाग लेना चाहिये तथा प्रतिवर्ष 3 अक्टूबर को मनाये जाने वाले कार्रवाई दिवस सहित वुफ्टू द्वारा समय – समय पर तय किये जाने वाले कार्यक्रमों को लागू करना चाहिये।**
- **टी यू आई' को यह सुनिश्चित करते हुए कि नये कैडर व लीडर अपने पद के कार्यभार का निष्पादन सक्रिय व प्रभावी रूप से करने में सक्षम हैं, अपनी काँग्रेसों में जनतांत्रिक तरीके से नेताओं का चुनाव करना चाहिये।**

कोलकाता, भारत में नौ टी यू आई' के प्रतिनिधियों की हिस्सेदारी के साथ 9–10 अक्टूबर, 2017 को हुई यह बैठक वुफ्टू सचिवालय से, टी यू आई' द्वारा पेश विभिन्न प्रस्तावों व कार्रवाईयों को ठोस रूप देने का अनुरोध करती है। वुफ्टू सचिवालय टी यू आई को नियमित रूप से सूचनाओं का आदान–प्रदान कर सकता है और उन्हें वर्गोन्मुख व संगठनात्मक मदद दे सकता है।

vk|kfxd Jfedk d fy, miHkkDrk eY; lpdk vk/kkj o"k 2001=100

u- 112@6@2006&,ulhihvkb

jkT;	dsn	जुलाई 2017	vxLr 2017
vk/k izns'k	xq.Vwj	276	279
	gSnjkckn	250	249
	fo'kk[kkiÿkue	280	285
	okjaxy	291	289
vle	MeMek frulf[k;k	259	262
	xqokgkVh	247	249
	ycd flYpj	259	262
	efj;kuh tkjgkV	243	245
	jxkikjk rsti qj	239	243
fcgkj	eq?kj&tekyiqj	297	300
p.Mhx<	p.Mhx<	279	284
NÿhlIx<	fHkykbZ	311	312
fnYyh	fnYyh	263	264
Xkkvk	xkvk	297	297
Xkqtjkr	vgenkckn	274	274
	Hkkouxj	269	270
	jktdkV	272	272
	lwjr	263	262
	oMknjk	261	262
gfj;k.kk	Qjhnkckn	262	263
	;euk uxj	275	277
fgekpy	fgekpy çn'k	257	259
tEew ,oa d'ehj	Jhuxj	263	262
>kj[k.M	ckdkjk	306	306
	fxfjMhg	337	335
	te'kniqj	307	308
	>fj;k	326	326
	dkMek	323	325
	jkph gfV;k	291	292
dukVd	cyxke	291	291
	cxykj	301	305
	gcyh /kkjokM	301	303
	ejdjk	299	299
	eSlwj	294	292
djy	,.kkdqye@vyob	302	299
	eq.MkD;ke	326	327
	fDoyku	279	282
e/; çn'k	Hkkiky	287	293
	fNNwokM	261	261
	bUnkj	281	281
	tcyiqj		

jkT;	dsn	जुलाई 2017	vxLr 2017
egjk"V	eEcbZ	293	294
	ukxiqj	318	318
	ukfld	293	294
	iq.kk	276	277
	'kkykiqj	296	296
mMhlk	vkxy&rkypj	298	300
	jkmjdqyk	296	304
ikfMpfj	ikfMpfj	301	298
iatkc	verlj	285	287
	tkyU/kj	279	287
	yf/k;kuk	276	277
jktLFkku	vtej	263	265
	HkhyokMk	279	279
	t;iqj	274	275
rfeyukMq	pUuS	266	263
	dk;EcVwj	270	271
	dUuwj	287	281
	enqjkbZ	284	282
	lqye	274	274
	fr#fpjkiYyh	291	289
f=iqjk	f=iqjk	296	295
mÿkj çn'k	vkxjk	254	257
	xkft;kckn	308	312
	dkuiqj	278	280
	y[kuÅ	291	293
	okjk.klh	285	281
if'pe cxky	vklulky	286	286
	nkftfyx	307	306
	nxkiqj	256	256
	gfYn;k	308	308
	gkoMk	314	315
	tkyikbZxMh	270	272
	dkydkrk	268	279
	jkuhxat	269	270
	flyhxMh	255	257
vf[ky Hkkjrh; lpdk		261	264
		285	285

सीटू का मुखपत्र

सीटू मजदूर

ग्राहक बनें

- **व्यक्तिगत ग्राहकों के लिए** – वार्षिक ग्राहक शुल्क – रू0 100/–
- **एजेंसी** – कम से कम पाँच प्रतियों; 25% छूट कमीशन के रूप में;
- **भुगतान** – चेक द्वारा – ''सीटू मजदूर'' जो कनारा बैंक, डीडीयू मार्ग शाखा, नई दिल्ली–110002 पर देय

  बैंक मनी ट्रांसफर द्वारा – एसबीए/सीन0 0158101019568;
  आइएफसीकोड : सीएनआरबी 0000158;
- **संपर्क:** ई मेल/पत्र की सूचना के साथ
  प्रबंधक, सीटू मजदूर, सीटू केन्द्र, बी टी आर भवन,
  13 ए राऊज एवेन्यू, नई दिल्ली–110002; ईमेल: citubtr@gmail.com
  फोन: (011) 23221306 फैक्स: (011) 23221284

राज्यों के संयुक्त ट्रेड यूनियन कन्वेंशन

(रिर्पोट पृ० 11)

मध्यप्रदेश

राजस्थान

पंजाब

मध्यप्रदेश में आंगनवाडी कर्मियों की तीन दिवसीय हड़ताल

(रिपोर्ट पृ० 21)

जबलपुर

डिंडोरी

जुलाइ

Posted at NDPSO New Delhi- 1 Postal Regd. No. DL(C)-01/1201/15-17 RNI No. 34666/79: 6th-7th of every month Licensed to Post without prepayment under License No.U(C)-38/2015-2017 (Date of Publication - 5/11/2017)

कोलकाता में डब्ल्यू एफ टी यू–टी यू आई' की वार्षिक बैठक

(रिपोर्ट पृ० 24)

बैठक का सत्र

डब्ल्यू एफ टी यू महासचिव जार्ज मावरिकॉस व सीटू महासचिव तपन सेन इस अवसर पर मजदूरों की सभा को संबोधित करते हुए

मजदूरों की सभा की एक झलक

तपन सेन द्वारा सेंटर ऑफ इण्डियन ट्रेड यूनियन्स के लिए मुद्रित और प्रकाशित तथा प्रोग्रैसिव प्रिंटर्स, ए–21 झिलमिल इण्डस्ट्रियल एरिया, शाहदरा, दिल्ली–95 से मुद्रित तथा बी टी रणदिवे भवन, 13–ए राउज एवेन्यू, नई दिल्ली–110002 से प्रकाशित (फोनः 23221288, 23221306; http://www.citucentre.org, CITU email: citu@bol.net.in, citubtr@gmail.com) सम्पादक : **के हेमलता**

असम

गुजरात

पंजाब

महाराष्ट्र

रायकोट, पंजाब

महाराष्ट्र

कोलकाता

नोएडा (एन सी आर)

अमृतसर, पंजाब

नई दिल्ली

गुवाहाटी, असम

रोपड़ , पंजाब